इस्लामी

गुलदस्ता

(जदीद एडीशन)

❋ मुरत्तिब ❋

मौलाना मुहम्मद जाफर अली सिद्दीकी, किर्लोस्करवाडी

❋ नाशिर ❋

आली जनाब सखावत अली शाह साहिब

शाह मंजिल, प्लॉट नं. १०, राजू नगर, हॉस्पेट जि. बेल्लारी (कर्नाटक)

वुजू और गुस्ल का तरीका क्या है?

वुजू करने का तरीका :

वुजू करने का तरीका यह कि पहले (बिस्मिल्लाह) पढकर उंगली से दांत मसले, फिर दोनों हाथों को गट्टों तक तीन बार धोए, पहले दाहिने हाथ पर पानी डाले, फिर बाएं हाथ पर, दोनों हाथों को एक साथ न धोए, फिर दाहिने हाथ से तीन बार कुल्ली करे, फिर बाएं हाथ की छोटी उंगली से नाक में पानी डालकर साफ करे और दाहिने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढाए फिर पूरा चेहरा धोए यानी पेशानी पर बाल उगने की जगह से ठोडी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर हिस्सा पर तीन बार बहाए, इसके बाद दोनों हाथ कुहनियों समेत तीन बार धोए, उंगलियों की तरफ से कुहनियों के ऊपर तक पानी डाले, कुहनियों की तरफ से न डाले, फिर एक बार दोनों हाथ से पूरे सर का मसह करे, फिर कानों का और गर्दन का एक-एक बार मसहकरे, फिर दोनों पांव टखनों समेत तीन बार धोए।

धोने का मतलब यह है कि जिस चीज को धोवो उसके हर हिस्सा पर पानी बह जाए।

गुस्ल करने का तरीका :

गुस्ल करने का तरीका यह है कि पहले गुस्ल की नीयत करके दोनों हाथ गट्टों तक तीन बार धोए फिर इसतिनजा (आगे-पीछे) की जगह धोए उसके बाद बदन पर अगर कहीं पेशाब या पाखाना वगैरह लगा हो तो उसे दूर करे फिर नमाज जैसा वुजू करे मगर पाँव न धोए हाँ अगर चौकी या पत्थर वगैरह ऊँची चीज पर नहाए तो पाँव भी धोले। इसके बाद बदन पर तेल की तरह पानी चुपडे फिर तीन बार दाहिने कंधे पर पानी बहाए और फिर तीन बार बायें कंधे पर फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाए तमाम बदन पर हाथ फेरे और मले फिर नहाने के बाद फौरन कपडा पहन ले।

गुस्ल में तीन बातें फर्ज हैं कुल्ली करना, नाक में सख्त हड्डी तक पानी चढाना, तमाम जाहिर बदन पर सर से पाँव तक पानी बहाना।

तयम्मुम करने का तरीका :

तयम्मुम करने का तरीका यह है कि अव्वल दिल में नीयत करे फिर दोनों हाथ की उंगलियां फैला करके जमीन पर मारे और ज्यादा गर्द लग जाए तो झाड ले फिर उससे सारे मुंह का मसह करे फिर दोबारा दोनों हाथ जमीन पर मारकर दाहिने हाथ को बाएं हाथ से और बाएं हाथ को दाहिने हाथ से कुहनियों समेत मले।

जुबान से तयम्मुम की नीयत अदा करते वक्त यह कहे, "**नीयत की मैं ने तयम्मुम की अल्लाह तआला का तकर्रुब हासिल करने के लिए।**" तयम्मुम का यही तरीका वुजू और गुस्ल दोनों के लिए है।

तयम्मुम में तीन बातें फर्ज हैं, नीयत करना, पुरे मुंह पर हाथ फेरना, दोनों हाथों का कुहनियों समेत मसह करना, अगर अंगूठी पहने हो तो उसके नीचे हाथ फेरना फर्ज है। और औरत अगर चूडी या जेवर पहने हो तो उसे हटा कर हर हिस्सा पर हाथ फेरना फर्ज है।

पाक मिट्टी, पत्थर, रेत, मुलतानी मिट्टी, गेरु, कच्ची या पक्की ईंट पत्थर या चुना की दीवारों से तयम्मुम करना जाइज है।

सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, लकडी, अलमूनियम, जस्ता, कपडा, राख, और हर किस्म के गल्ला से तयुम्मम करना जाइज नहीं। यानी जो चीजें आग में पिघल जाती हैं या जलकर राख हो जाती हैं उन चीजों से तयम्मुम करना जाइज नहीं।

जब पानी पर कुदरत न हो तो तयम्मुम करना जाइज है। पानी पर कुदरत न होने की यह सूरत है कि ऐसी बीमारी हो कि वुजू या गुस्ल से उसके ज्यादा हो जाने का सहीह अन्देशा हो या ऐसे मुकाम पर मौजूद हो कि वहाँ चारों तरफ एक-एक मील तक पानी का कहीं पता न हो या इतनी सर्दी हो कि पानी के इस्तेमाल से मर जाने या बीमार हो जाने का कवी अन्देशा हो या कुंआं मौजूद है मगर डोल व रस्सी नहीं पाता है। इनके अलावा पानी पर कुदरत न होने की और भी सूरतें हैं जो बहारे शरीअत वगैरा बडी किताबों से मालूम की जा सकती हैं।

कुछ वक्त ऐसे भी हैं जिन में नमाज जाइज नहीं

सूरज निकलने के वक्त, सूरज डूबने के वक्त और दोपहर के वक्त किसी किस्म की कोई नमाज पढना जाइज नहीं। हाँ अगर उस दिन अस्र की नमाज नहीं पढी है तो सूरज डूबने के वक्त पढ ले मगर इतकी देर करना सख्त गुनाह है।

सूरज निकलने के वक्त जब सूरज का किनारा जाहिर हो उस वक्त से लेकर तकरीबन बीस मिनट तक नमाज पढना जाइज नहीं।

सूरज डूबने के वक्त जब सूरज पर नजर ठहरने लगे उस वक्त से लेकर डूबने तक नमाज पढना जाइज नहीं है और यह वक्त भी तकरीबन बीस (२०) मिनट है।

ठीक दोहपर के वक्त तकरीबन चालीस (४०) पचास (५०) मिनट तक नमाज पढना जाइज नहीं। अगर मकरुह वक्तों में जनाजा लाया गया तो उसी वक्त पढे कोई कराहत नहीं। कराहत उस सूरत में है कि पहले से जनाजा तैयार मौजूद है और ताखीर की यहाँ तक कि वक्ते कराहत आ गया (बहारे शरीअत, आलमगीरी)

इन मकरुह वक्तों में कुरआन शरीफ न पढे तो बेहतर है और पढे तो कोई हर्ज नहीं (अनावरुल हदीस)

आजान और इकामत

फर्ज नमाजों को जमाअत के साथ मस्जिद में अदा करने के लिए आजान कहना सुन्नते मुअक्कदा है मगर उस का हुक्म मिसल वाजिब के है यानी अगर आजान न कही गई तो वहाँ के सब लोग गुनाहगार होंगे।

जब नमाज का वक्त हो जाए तो आजान कहनी चाहिए। वक्त से पहले जाइज नहीं अगर वक्त से पहले कही गई तो वक्त होने पर लौटाई जाए।

बच्चे और मगमूम (फिक्रमन्द) के कान में, मिरगी वाले, गजबनाक और बदमिजाज आदमी या जानवर के काम में, सख्त लडाई और आग लगने के वक्त, मय्यत को दफन करने के बाद। जिन्न की सरकशी के वक्त और जंगल में जब रास्ता भूल जाए और कोई बताने वाला न हो इन सूरतों में आजान कहना मुसतहब है। (बहारे शरीअत, शामी जिल्द अव्वल सफा २५८)

मस्जिद के सहन से बाहर किसी बुलन्द जगह पर किबला की तरफ मुंह करके खडा हो और कलिमह की दोनों उंगलियों को कानों में डालकर बुलंद आवाज से आजान के कलिमात को ठहर ठहर कर कहे जल्दी न करे और ''**हय्य अलस्सलाह**'' कहते वक्त दाहिनी जानिब और ''**हय्य अललफलाह**'' कहते वक्त बाएं जानिब मुंह फेरे।

आजान के जवाब का मसअला यह है कि आजान कहने वाला जो कलिमह कहे तो सुनने वाला भी वही कलिमह कहे मगर ''**हय्य अललफलाह**'' के जवाब में ''**लाहौ-ल वला कूव-त इल्ला बिल्लाह**'' कहे और बेहतर यह है कि दोनों कहे। और फज्र की आजान में ''**अस्सलातु खैरुम मिनन्नौम**'' के जवाब में ''**सदक-त व बरर-त व बिलहक्कि नतक-त**'' कहे।

आजान कहने वाला ही इकामत कहे। उसकी इजाजत के बगैर दूसरा न कहे अगर बगैर इजाजत दूसरे ने कही और आजान देने वाले को नागवार हो तो मकरुह है।

जो आजान के वक्त बातों में मशगूल रहे उस पर मआजल्लाह! खातिमा बुरा होने का खौफ है (बहारे शरीअत)

जब मुअज्जिन ''**अश्हदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह**'' कहे तो सुनने वाला दुरुद शरीफ पढे और मुसतहब है कि अगूंठों को चूम कर आँखों से लगाले और कहे ''**कुर्रतु ऐनी बि-क या रसूलल्लाह! अल्लाहुम्म मत्तिनी बिस्समअि वलबसरि**'' (बहारे शरीअत, शामी)

सही तौर पर नमाज पढने का तरीका

नमाज सही तौर पर अदा होने के लिए अच्छी तरह वुजू करना लिबास, बदन, और पढने की जगह का पाक होना जरुरी है।

किब्ला की तरफ इस तरह खडा हो कि दोनों पाँव के बीच कम से कम ४ उंगुली और ज्यादा से ज्यादा एक बालिश्त की दूरी रहे।

जिस नमाज का वक्त हो उसकी नीयत दिल से भी करे और जबान से भी करे। अगर जमाअत से पढे तो इमाम की इक्तिदा (पीछे होने) की नीयत भी करे।

फिर **"तकबीर तहरीमा"** के लिए दोनों हाथ कानों तक उठाए, दोनों हाथों की हथेलियाँ और उंगलियाँ किब्ले की तरफ हों। उंगलियाँ अलग-अलग हों और अंगूठे कानों की लव के बराबर हों।

फिर **"अल्लाहु अकबर"** कहकर दोनों हाथ नाफ़ के नीचे इस तरह बाँधे कि दांये हाथ की हथेली बांयें हाथ की कलाई पर रहे और अंगूठे और छोटी उंगली से कलाई को पकडे रहे और बीच की तीनों उंगलियाँ ऊपर कलाई पर फैली रहें।

फिर **"सना"** आहिस्ता-आहिस्ता पढे कि खुद अपने कानों से सुन सके। इस तरह आहिस्ता पढना कि खुद को सुनाई न दे, नमाज को बिगाड देता है।

फिर **"अऊजु बिल्लाह"** व **"बिस्मिल्लाह"** पढकर सूरह फातिहा **"अल्हम्दु शरीफ"** पढे। लेकिन जहरी नमाज (जोर से पढी जाने वाली नमाज) में सना, अऊजुबिल्लाह, बिस्मिल्लाह आहिस्ता पढे। सूरह फातिहा खत्म कर के आहिस्ता से **"आमीन!"** कहे। इसके बाद कोई सूरह या कोई बडी आयत, या तीन छोटी आयतें पढे। इमाम के पीछे नमाज पढ रहा हो तो **"सना"** के सिवा कुछ न पढे । खामोश खडा रहे।

फिर **"अल्लाहु अकबर"** कहते हुए रुकूअ में जाये, रुकूअ में दोनों हाथों की उंगलियाँ खोल कर घुटनों को मजबूती से पकडे, पीठ बिलकुल सीधी रखे। सर और पीठ को बराबर रखे। दोनों हाथ पसलियों से अलग रहें और पाँव की पिंडलियाँ सीधी खडी रहें। रुकूअ की हालत में तीन या पाँच बार **"सुब्हा न रब्बियल्ल अजीम"** कहने के बाद **"समिअल्लाहु लिमन हमिदह"** कहते हुए खडा हो। सुब्हानल्लाह कहने में जितनी देर लगती है, उतनी देर खडा रहे। अगर अकेले पढ रहा है तो **"रब्बना लकल हम्द"** भी कहे। और पेश इमाम के साथ पढ रहा हो तो सिर्फ **"रब्बना लकल हम्द"** और अगर पेश इमाम है तो सिर्फ, **"समिअल्लाहु लिमन हमिदह"** कहे।

फिर **"अल्लाहु अकबर"** कहते हुए सज्दे में जाये, पहले घुटनों को जमीन पर रखे, फिर दोनों हाथ, फिर नाक, फिर पेशानी। चेहरा दोनों हाथों के बीच और अंगूठे कानों की लव के बराबर रहे। हाथ की उंगलियाँ मिली रहें, वरना सज्दा न होगा। कुहनियों को पसलियों से और नाक के नर्म हिस्से को जमीन पर खूब दबाए। सज्दे में तीन या पाँच बार **"सुब्ह-न रब्बियल्ल आला"** पढे।

फिर सज्दे से **"अल्लाहु अकबर"** कहते हुए सर इस तरह उठाए कि जमीन से पहले पेशानी उठाए, फिर नाक, फिर दोनों हाथ। बैठते वक्त दायाँ पाँव खडा रखे, पाँव की उंगलियाँ किब्ला की तरफ हों और बायाँ पाँव बिछा कर उस पर बैठ जाये। इतनी देर बैठे जितनी देर सुब्हानल्लाह कहने में लगती है। बैठने की हालत में अपनी निगाह गोद में रखे रुकूअ की हालत में कदमों पर रखे और खडे होने की हालत में सज्दे की जगह पर रखे।

फिर **"अल्लाहु अकबर"** कहकर दूसरा सज्दा करे। हाथों को जमीन पर घसीट कर आगे ले जाना मना है। फिर दूसरे सज्देसे **"अल्लाहु अकबर"** कहते हुए हाथ घुटनों पर रख कर इस तरह खडा हो कि **"अल्लाहु अकबर"** की आवाज का सिलसिला पेशानीउठाने से लेकर खडे होने तक जारी रहे। फिर दूसरी रकात इसी तरह पूरी करे, जिस तरह पहली रकात पढी थी। इसमें सना नहीं पढी जाएगी।

दूसरी रकात पूरी करके दायाँ पाँव खडा करके बायें पाँव पर बैठ जाये और "**अत्तहीयात**" पढे।

दो रकात वाली नमाज हो तो "**अत्तहीयात**" के बाद दुरुद शरीफ और दुआ-ए मासूरा पढकर सलाम फेर दे। और अगर ४ रकात वाली नमाज हों तो "**अत्तहीयात**" पढकर खडा हो जाए। और फर्ज की तीसरी और चौथी रकात में सिर्फ "**सूरह फातिहा**" पढे। इसके साथ कोई सूरह न मिलाये। फर्ज की तीसरी या चौथी रकात पूरी करने के बाद "**अत्तहीयात, दुरुद शरीफ**" और "**दुआ-ए मासूरा**" पढकर सलाम फेर दे।

पाँचो वक्त के नमाजों की रकातों की तफसील :

★ **फज्र.** : २ रकात सुन्नते मुअक्कदा - २ रकात फर्ज।

★ **जुहर** : ४ रकात सुन्नते मुअक्कदा - ४ रकात फर्ज - २ रका सुन्नते मुअक्कदा - २ नफ्ल

★ **अस्र** : ४ रकात सुन्नते गैर मुअक्कदा - ४ फर्ज

★ **मगरिब** : ३ रकात फर्ज - २ सुन्नते मुअक्कदा २ नफ्ल

★ **इशाअ** : ४ सुन्नते गैर मुअक्कदा - ४ फर्ज-२ सुन्नते मुअक्कदा-२ नफ्ल -३ वित्र - २ नफ्ल

औरतों की नमाज का फर्क

★ औरतें इस तरह नमाज में खडी हों कि दोनों पाँव के बीच ज्यादा से ज्यादा ४ उंगुल की दूरी रहे। इस से ज्यादा न रहें।

★ नमाज शुरु करते वक्त अपने हाथों को कंधों से ऊपर न उठायें।

★ तकबीर तहरीमा "**अल्लाहु अकबर**" कह कर नमाज शुरु करने के बाद हाथ अपने सीने पर इस तरह रखे कि दायाँ हाथ बायें हाथ पर हो।

★ रुकूअ में अपनी कमर इतना ही झुकायें जितना आसानी से झुका सकती हैं। रुकूअ में पीठ और पाँव झुके रहें, मर्दो की तरह सीधी न करें। घुटनों पर जोर न दें।

★ रुकूअ से सज्दे में जाते हुए बाये पुट्ठे के बल जमीन पर बैठें और दोनों पाँव दाहिनी तरफ निकालें और सिमटकर सज्दा करें और कुहनियाँ और हाथ जमीन पर बिछाए रखें "**अत्तहीयात**" पढने के वक्त भी दोनों पाँव दाहिनी तरफ निकालें और बायें पुट्ठे के बल जमीन पर बैठें।

★ औरतें भी खडी होकर नमाजें पढें। फर्ज व वाजिब जितनी नमाजें बगैर मजबूरी बैठ कर पढ चुकी हैं उनकी कजा करें (फिर से पढें) और तौबा करें और अल्लाह तआला से वादा करें कि, "मौला तआला मैं तुझ से वादा करती हूँ कि आइन्दा बैठ कर नमाज नहीं पढूँगी"।

★ नफ्ली नमाजें बैठकर पढ सकती हैं। अगर वह भी खडी होकर पढें तो सवाब ज्यादा मिलेगा।

★ औरतों का जमाअत से नमाज पढना नाजाइज है।

★ औरतों पर जुमा और ईदैन की नमाज वाजिब नहीं।

पसे जिक्रे हक, जिक्र है मुस्तफा का

ये इकराम है, मुस्तफा पर खुदा का।
कि सब कुछ खुदा का, हुआ मुस्तफा का।।
मेरे गेसूवों वाले, मैं तेरे सदके।
कि सर पर हजूमे बला है, बलाका।।
अजाँ क्या, जहाँ देखो! ईमान वालो।
पसे जिक्र हक, जिक्र है मुस्तफा का।।
कि पहले जबाँ हम्द से पाक हो ले।
तो फिर नाम ले वह हबीबे खुदा का।।
तेरा नाम लेकर जो मांगे वह पाये।
तेरा नाम लेवा है प्यारा खुदा का।।
न क्यों कर हो उस हाथ में सब खुदाई।

ये हाथ तो हाथ है किब्रिया का ।।
तेरे रुत्बा में जिसने चूनो-चिराँ की।
न समझा वह बदबख्त रुत्बा खुदा का।।
खुदा मद्ह ख्वाँ है खुदा मद्ह ख्वाँ है।
मेरे मुस्तफा का मेरे मुस्तफा का।।
खुदा का वह तालिब, खुदा उसका तालिब।
खुदा उसका प्यारा, वह प्यारा खुदा का।।
सहारा दिया जब मेरे नाखुदा ने।
हुई नाव सीधी, फिरा रुख हवा का।।
भला है 'हसन' का जनाबे 'रजा' से।
इलाही भला हो जनाबे 'रजा' का।।

सूरह फातिहा और चन्द सूरतें

सूरह फातिहा

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। अर्रहमानिर्रहीम। मालिकि यौमिद्दीन। ईया-क नअबुदू व ईया-क नस्तअीन। इहदि नस्सिरातल मुस्तकीम. सिरातल्लजी-न अनअम-त अलैहिम, गैरिल मगदूबि अलैहिम व लद्दाल्लीन।

सूरह अलम नशरह

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

अलमनशरह ल-क सदरक. व वदअना अन्-क बिजरक अल्लजी अन्-क-द जहरक, व-रफअना ल-क जिकरक. फ-इन्-न मअल अुसरि युसरा, इन्-न मअल अुसरि युसरा. फ-इजा फरग-त फन्सब व इला रब्बि-क फरगब।

सूरह कद्र

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

इन्ना अनजलनाहु फी लैलतिल कद्र व-मा-अदरा-व मा लैलतुल कद्र लैलतुल कदरि खैरुम्मिन अलफि शहर तनज्जलुल मला-इ कतु वर्रुहु फीहा बिइज्नि रब्बिहिम मिन कुल्लि अम्र सलामुन हि-य हत्ता मतलअिल फज्र।

सूरह अस्र

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

वल अस्र, इन्नल इन्सा-न लफी खुस्र इल्लल्लजी न आ-मनू व अमिलुस्सालिहाति व-त-वा सौबिल हक्कि व-तवा सौबिस्सब्र।

सूरह फील

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

अ-लम त-र कै-फ फ-अ-ल रब्बु-क बिअसुहाबिल फील अ-लम यजअल कै-द हुम फी तदलीलिंव व अर-स-ल अलैहिम तैरन अबाबील. तरमीहिम बिहिजारतिम्मिन सिज्जीलिन फ-ज-अ-ल-हुम क-असफिम्मअकूल।

सूरह कुरैश

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

लिओीलाफि कुरैश, ओीलाफि हिम रिह-तलश्शिताअि वस्सैफ. फल-यअ-बुदू रब्-ब हाजल बैत अल्लजी अत-अ-म-हुम मिन जूअिंव व आ-म-न हुम मिन खौफ।

सूरह माअून

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

अ-र अैतल्लजी युकज्जिबु बिद्दीन फ-जालिकल्लजी यदुअअुल यतीम व-ला यहुद्दु अला तआमिल मिसकीन फवै लुललिल मुसल्लीन. अल्लजी-न हुम अन सलातिहिमसाहून. अल्ली-न हुम युरा अू-न व यम-न अूनल माअून।

सूरह कौसर

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

इन्ना आतै-न कल-कौसर फ-सल्लि लिरब्बि-क वन्हर इन्-न शानि-अ-क हुवल अबतर।

सूरह काफिरुन

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

कुल या अय्युहल काफिरुन ला अअबुदु मा-तअबुदून व-लाअन्तुम आबिदू-न माअअबुद व लाअना आबिदुम्मा अबत्तुम. व लाअन्तुम आबिदू-न माअअबुद लकुम दीनुकुम व लि-य दीन।

सूरह नस्र

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

इजा जा-अ नसरुल्लाहि वलफत्ह. व रअैतन्ना-स यद खुलू-न फीदी निल्लाहि अफ्वाजा. फ-सब्बिह बिहम्दि रब्बि-क वस्तगफिरह. इन्नहू का-न तव्वाबा।

सूरह लहब

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

तब्बद यदा अबी ल-ह बिंव व तब्ब माअगना अन्हु मालुहू व-मा-कसब, सयसला नारन जा-त ल-ह बिंव वम-र-अतुहू, हम्मा लतल हतब फीजी दिहा हबलुम-मिम-मसद।

सूरह इख्लास

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

कुल हुवल्लाहु अहद. अल्ला हुस्समद. लम यलिद व लम यूलद. व लम यकुल्लहू कुफुवन अहद।

सूरह फलक

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

कुल अ-ऊजु बिरब्बिल फलक. मिन् शर्रि मा ख-ल-क व मिन शर्रि गासिकिन इजा वकब. वमिन शर्रिन्नफ्फासाति फिल-अुकद व मिन शर्रि हासिदिन इजा हसद।

सूरह नास

बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम

कुल अ-ऊजु बिरब्बिन्नास मलिकिन्नास. इलाहिन्नास मिन शर्रिल वसवासिल खन्नासिल्लजी युवसविसु फी सुदूरिन्नास. मिनल जिन्नति वन्नास।

सना

सुबहा-न-क अल्लाहुम्म व बिहम्दि-क-व-तबार कसमु-क व तआला जदु-क व लाइला-ह गैरुक

तशहहुद

अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलै-क अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व ब-रकातुहू अस्सलामु अलैना व-अला अिबादिल्ला हिस्सालिहीन अशहुद अल्ला-इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह

तशहहुद पढते हुए जब कलिमए "ला" के करीब पहुचे तो दाहिने हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का हल्का बनाए और छंगुलियाँ और उसके पास वाली को हथेली से मिलादे और लफ्जे "ला" पर कलिमह की उंगली उठाए मगर उसको हिलाए नहीं । और कलिमए "इल्ला" पर गिरा दे और सब उंगलियां फौरन सीधी कर ले।

दुरुदे इब्राहीमी

अल्लाहुम-म सल्लि अला सैय्यिदिना मुहम्मदिंव व अला आलि सैय्यिदिन मुहम्मदिना कमा सल्लै-त अला सैय्यिदिना इब्राही-म व अला आलि सय्यिदिना इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद।

अल्लाहुम-म बारिक अला सैय्यिदिना मुहम्मदिंव व अला आलि सैय्यिदिना मुहम्मदिन कमा बारक-त अला सैय्यिदिना इब्राही-म व अला आलि सैय्यिदिना इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद।

दुआ-ए मासूरा

अल्लाहुम्मग फिरली वलिवालिदय-य वलिमन तवाल-द व लिजमीअिल मूमिनी-न वलमूमिनाति वल मुस्लिमी-न वल मुस्लिमातिल अहयाइ मिनहुम वल अम्वाति इन्न-क मुजीबुद्‌अवाति बिरह् मतिक या अरहमर्राहिमीन।

या कोई और दूसरी दुआ-ए मासूरा पढे। इसके बाद दाहिने मोढे की तरफ मुंह करके "**अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह**" कहे फिर बांएं तरफ।

दुआ-ए कुनूत

"अल्लाहुम-म इन-न नस्तअीनु-क व नस्तगफिरु-क व नुमिनु बि-क व नतवक्कलु अलै-क व नुसुनी अलैकल खैर व नशरुकु-क वला नकफुरु-क नखलउ व नतरुकु मैंयफजुरू-क अल्लाहुम-म ईया-क नअबुदु व-ल-क-नुसल्ली व नसजुदु व इलै-क नसआ व नह् फिदु व नरजू रहमत-क व नखशा अजाब-क इन-न अजाब-क बिल कुफ्फारि मुलहिक"

जिस शख्स को दुआ-ए कुनूत याद न हो यह यह दुआ पढे:-

"अल्लाहुम-म रब्बना आतिना फिद्दुनया ह-स-न-तौं वफिल आखिरति ह-स-न-तौं वकिना अजाबन्नार"

- सब से बडी मुसीबत, कर्ज है।
- सब से अच्छा जुहद, मेहनत है।
- सब से अच्छी बात, उमीद है।
- सब से बडा डॉक्टर, परहेज है।
- सब से बडी दौलत, उलूम है।

- सब से बडा सहारा, खुदा का है।
- सब से कडवी चीज, मुफलिसी है।
- सब से खतरनाक चीज, लालच है।
- सब से बडी बेवकूफी, खुद को अच्छा समझना है।
- सब से बडी नेमत, तन्दुरूस्ती है।

बे नमाजी की पन्द्रह सजाऐं

सरकारे मदीना सुरुरे कल्ब व सीना का फरमाने आलीशान है "जिसने नमाज के मुआमले में सुस्ती बरती अल्लाह उसे पन्द्रह किस्म की सजाऐं देगा। उन में से छः दुनिया में, तीन मौत के वक्त, तीन कब्र में और तीन कब्र में और तीन कब्र से निकलने के बाद दी जाएंगी

दुनिया की छः सजाऐं ये हैं :-

१. अल्लाह तआला उस की उम्र से बरकत दूर फरमा देगा।
२. नेकबन्दों के चेहरों की जमक-दमक उस से छीन लेगा।
३. अल्लाह तआला उसे किसी अमल का अज्र, सवाब नहीं देगा।
४. उस की कोई दुआ आसमान तक बुलन्द नहीं होगी।
५. दुनिया में लोगों के सामने जलील व ख्वार करेगा।
६. उस के लिए नेक लोगों की दुआओं में कोई हिस्सा न होगा।

मौत के वक्त की सजाऐं ये हैं :-

१. जलील हो कर मरेगा।
२. भूका मरेगा।
३. प्यासा मरेगा अगरचे सारी दुनिया के दरियाओं का पानी पिला दिया जाए।

कब्र में होने वाली सजाऐं ये हैं :-

१. अल्लाह तआला उस की कब्र तंग कर देगा और कब्र उस को सख्ती से दबोचेगी कि उस की पसलियाँ टूट कर ए दूसरे में मिल जाएंगी।
२. उस की कब्र में आग जला दी जाएगी और दिन रात उस में उलट-पुलट किया जाता रहेगा।
३. अल्लाह तआला कब्र में उस पर एक अजदहा (खौफनाक साँप) मुसल्लत करेगा। जिस का नाम 'अश-शजाउल अकरअ (यानी गंजा साँप) है। उस की आँख आग की और नाखुन लोहे के। हर नाखुन की लम्बाई एक दिन की दूरी के बराबर होगी उस की आवाज बिजली की कडक की मानिन्द होगी। वह उससे कहेगा, "मैं अश-शजाउल हूँ। मुझे मेरे रब तआला ने हुक्म दिया है कि मैं तुझे नमाजे सुब्ह तर्क करने की सजा में सुब्ह से जुहर तक मारूँ और नमाजे जुहर के छोडने पर जुहर से नमाजे अस्र तक, अस्र के छोडने पर, अस्र से मगरिब तक, नमाजे मगरिब के छोडने पर मगरिब से ईशा तक और ईशा को छोडने पर ईशा से फज्र तक मारुँगा।" वह जब भी मारेगा तो मुर्दा (बे नामाजी) सत्तर गज तक जमीन में धंस जाएगा फिर अजदहा अपने नाखुनों को मुर्दे के बदन के साथ जमीन में दाखिल करके उस को निकालेगा। बे नमाजी की ये सजा कियामत तक जारी रहेगी।

कब्र से निकलने के बाद की सजाऐं ये हैं :- १. अल्लाह तआला जहन्नम की आग का बादल उस के चेहरे के सामने मुसल्लत फरमाएगा जो जहन्नम की तरफ हाँक कर ले जाएगा।
२. हिसाब के वक्त अल्लाह तआला उसकी तरफ निगाहे गजब फरमाएगा और उस के चेहरे का गोश्त झड जाएगा।
३. अल्लाह तआला निहायत ही सख्ती के साथ हिसाब लेगा। जिस से ज्यादा उस पर लंबी और सख्त और कोई सख्ती न होगी और अल्लाह तआला जहन्नम की तरफ ले जाने का हुक्म सादिर फरमाएगा । आह! वह कितना बुरा ठिकाना है !!! (कुर्रतुल उयून)

तोहफा-ए जुमा

सल्लल्लाहु अलन नबीइल उम्मीयि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलातँव व सलामन अलै-क या रसूलल्लाह !!

जो कोई हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत रखखे, तमाम जहान से ज्यादा हुजूर की अजमत दिल में जमाए हुजूर की शान घटाने वालों बद मजहबों से बेजार और उन से दूर रहे वह अगर इस दुरुदे मकबूल को हर रोज या बरोजे जुमा बाद नमाजे फज्र या बाद नमाजे जुमा या अस्र मदीना तय्येबा की जानिब (यानी किब्ला से दाहिने हाथ तिरछे) हाथ बांधे खडे होकर पढे बेशुमार सवाब पाए इस दुरुद को एक बार पढने से १०० दुरुद का सवाब मिलता है तो जिसने १०० बार पढा गोया दस हजार मरतबा दुरुद पढने का सवाब पाया बेहतर है कि बाद नमाजे जुमा दो चार, दस बीस, आदमी मिलकर पढे।

फजाइल व फवाइद :

इसके ४० फायदे हैं जो मोतबार हदीसों से साबित हैं यहाँ चन्द जिक्र किये जाते हैं:

१) इस दुरुद शरीफ के पढने वाले पर खुदाए तआला तीन हजार रहमतें नाजिल फरमाएगा।
२) उस पर दो हजार बार अपना सलाम भेजेगा।
३) पाँच हजार नेकियाँ उसके नामए आमाल में लिखेगा।
४) पाँच हजार गुनाह मुआफ फरमाएगा।
५) उसके माथे पर लिख देगा कि यह दोजख से आजाद है।
६) अल्लाह उसे कियामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा।
७) उसके माल में तरक्की और बरकत देगा।
८) उसकी औलाद और औलाद की औलाद में बरकत देगा।
९) दुशमनों पर गल्बा देगा।
१०) लोगों के दिलों में उसकी मुहब्बत रखेगा।
११) किसी दिन खाब में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जियारत नसीब होगी।
१२) ईमान पर खातिमा होगा।
१३) कियामत में हुजूर की शफाअत नसीब होगी।
१४) अल्लाह तआला उससे ऐसा राजी होगा । कि कभी नाराज न होगा।

उम्मते मुहम्मदया का खास तोहफा:
मनकूल है, कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बारगाहे इलाही में मुनाजत फर्माई, "इलाही ! मेरी उम्मत को तूने क्या अता फर्माया?"

अल्लाह तआला ने फर्माया, "ऐ-महबूब ! जुमा का दिन मेरा है और जन्नत मेरी है, मैं जुमा का दिन और जन्नत आपकी उम्मत को अता करता हूँ। और मैं जन्नत में आपकी उम्मत के साथ हूँगा।" (गुनयतुन्तालिबीन)

मुसलमानों को चाहिए कि इस अनमोल तोहफा की कद्र करें और जुमा के दिन का एहतराम करें। नमाजे जुमा दुनियावी कारोबार की वजह से हरगिज न छोडें अगर आपने जुमा की कद्र की तो आखिरत में आपकी कद्र की जाएगी इन्शा अल्लाह तआला , हूजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फर्माया- "जुमा मुबारक, मुसलमानों के लिए ईद है !"(नुजहतुल मजालिस)

तअज्जुब है !! : साल में ५२ जुमा आते हैं मानो साल में मुसलमानें के लिए ५२ ईदें "ईदुल फित्र और ईदुल अजहा" के नाम से मशहूर हैं, फिर ईदे मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर यार लोग शोर मचाते हैं कि, "ईदें तो सिर्फ दो ही हैं।" यह कहकर हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फर्मान, " जुमा मुबारक को ईद ठहराने'३ का इनकार करते हैं हालाँकि मुसलमानों के लिए तो सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदके से, सालाना ५५ ईदें बनती हैं। नादानों का हुजूर अलैहिस्सलाम के फर्मान को इनकार करके खुद को बडा दीनदार समझना तअज्जुब की बात।

तमाम दिन की सलामती : हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फर्माया, "जिसका जुमा सालिम हुआ उसके तमाम दिन सलामती वाले हो गए।" (नुजहतुल मजालिस)

जुमा का गुस्ल : बयान करते हैं कि अल्लाह तआला ने एक शहर पैदा फर्माया है जिसकी दिवारें अन्डे की तरह सफेद, उसके ७० दरवाजे हैं और उस में बेशुमार फरिश्तों का बसेरा है वे जुमा मुबारक के दिन उम्मते मुहम्मद्या के उन खुशनसीब लोगों के लिए मगफिरत की दुआऐं करते रहते हैं जो जुमा मुबारक के एहतराम के लिए नहाते हैं। (नुजहतुल मजालिस)

जान बूझकर जुमा छोडना जुर्म है:
हुजूर नबी-ए करीम सल्लाल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फर्माया, "जिसने बिला उज्र (मजबूरी) तीन जुमे छोडे, मानो उसने इस्लाम को पीठ के पीछे डाल दिया।" हजरत मावरदी अलैहिर्रहमह फर्माते हैं, "जिसका जुमा रह जाये उसे चाहिए कम से कम आधा दीनार सदका करे। मगर शर्त यह है कि बिला उज्र ऐसा हुआ हो। (नुजहतुल मजालिस)

तिजारत में कसम से बचो: हजरत सय्येदुना अबू कतादा रजियल्लाहु अन्ह से रिवायत है कि ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम का फरमाने आलिशान है कि "तुम लोग सौदा बेचने में बकसरत कसम खाने से बचते रहो क्योंकि कसम खाने से सौदा तो बिक जाता है मगर उसकी। बरकत बरबाद हो जाती है। (मिश्कात शरीफ)

माहे रमाजान : उकबा की खेती का बेहतरीन मौसम

रमजानुल मुबारक का महीना, बडी ही खैर व बरकत का महीना है। इसका एक-एक मिनिट रहमत व अजमत से भरा हुआ है। यह अल्लाह व रसूल का महबूब महीना है। यह उकबा की खेती का बेहतरीन मौसिम और बाजारे आखिरत का खास सीजन है। इसकी खैर व बरकत से महरूम रहना बडी ही बदनसीबी है। यही वह महीना है, जिसमें कुरआन करीम जैसी अजीम किताब नाजिल की गई है। अहादीस शरीफ में इसके बेशुमार फजाइल बयान किए गए हैं उन्हीं में कुछ नकल कर रहे हैं।

१) इस माह में जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाते है। और जहन्नम के दरवाजे बंद कर दिये जाते हैं।
२) इस माह में मोमिन की मौत शहादत है।
३) इस में मोमिन की रोजी बढा दी जाती है।
४) इसमें एक रात ऐसी है जो इर्शादे खुदा वंदी के मुताबिक हजार महीनों से बेहतर है, जिसे शबे कद्र कहते हैं।
५) इफ्तार के वक्त रोजादार की दुआ कुबूल होती हैं।
६) जन्नत में एक दरवाजा खास "रय्यान" है उसमें सिर्फ रोजादार ही दाखिल होंगें।
७) कुरआन की तिलावत करने वाले रोजा रखनवाले की कुरआन और रोजा क्यामत के दिन शफाअत करायेंगे।
८) रोजादार के मुँह की बू (बास) खुदा के नजदीक मुश्क से भी ज्यादा बेहतर हैं। मगर इस बू से मुराद मुह की गदा दहनी नहीं, बाल्कि भूक की वजह से जो मेदा से पैदा होती है।
९) रोजा दोजख की आग से बचाने के लिए सिपर (ढाल) और मजबूत किला है।
१०) एक नफल रोजे का सवाब, जमीन भर सोना खैरात कर देने से भी ज्यादा सवाब है, तो फर्ज रोजे के सवाब के बारे मे भला कौन अंदाजा लगा सकता है?
११) हर चीज की जकात है और बदन की जकात रोजा है।
१२) रोजादार के लिए फरिश्ते दिन व रात बख्शिश की दुआ करते हैं।
१३) बेरोजा दार को हजरते जिबरीले अमीन अलैहिस्सलाम ने बददख्त, बदनसीब होन की दुआ की है और महबूबे खुदा सल्लल्लाह तआला अलैहि वसल्लम ने उसपर आमीम फर्माकर अपनी खत्मे नुबूव वाली मोहर लगाई है।
१४) रोजादार का हश्र सिद्दीकीन व शोहदा (अल्लाह के महबूब बंदो) में होगा।
१५) रोजादार के लिए दो खुशी हासिल होती है एक इफ्तार के वक्त और एक उस वक्त जब कि खुदाए तआला से मुलाकात होगी।
१६) रोजा का बदला खुद रब है सुब्हानल्लाह! रब मिला, तो सब मिला। यह है रोजे की बरकत
१७) इस माह में नफल फर्ज के बराबर और फर्ज सत्तर फर्ज के बराबर है।
१८) जन्नती औरतें (हूरें) रोजादार से निकाह करने की तमन्ना व आरजू रखती हैं।
१९) शबे कद्र से महरुम रहने वाला बदनसीब है।
२०) गालिबन २७ वीं रात शबे कद्र है।
२१) अगर किसी रोजा दार को इफ्तार कराये तो रोजा का सवाब मिलता है। मगर रोजादार के सवाब में कोई कमी नहीं आती, बल्कि अल्लाह तआला अपने फज्ल व करम से अता फर्माता है।
२२) इस माह में शयातीन कैद कर दिये जाते हैं और दोजख के दरवाजे बंद कर दिये जाते हैं। मालूम हुआ जो लोग रमजान शरीफ का एहतराम नहीं करते, रोजा नहीं रखते, नमाज नही पढते वह शैतान की शरारत से नहीं बल्कि अपने नफ्स की शरारत से ऐसा करते हैं, मैदाने महशर में अगर बेरोजा दार से खुदा ने पूछा कि -
"तुम ने मेरी नाफरमानी क्यों की ?"
तो अगर बेरोजा दार ने शैतान का हवाला पेश किया कि-
"उसने नहीं रखने दिया"
तो फौरन शैतान वहीं हाजिर हो जायेगा और कहेगा -
"मौला! मैं तो रमजान के महीने में कैद था, फिर कब आकर इसको बहकाया? यह झूट बोलता हैं।"
२३) रमजान की आखिरी रात को बख्शिश होती है। (माखूज मफहूमे अहादीस शरीफ)

रोजे की हकीकत :-

दिल, आँख, कान, हाथ, पाँव, जबान सब का रोजा है। यह नहीं कि सिर्फ मुँह बन्द रहे और आजा (इंद्रिय) गुनाहों में लगे रहें! अपने नफ्स को गुनाहों से रोकना यह रोजा तो जिन्दगी के हर हर पल का है। रमजानल मुबारक में इसके साथ दिन भर खाने-पीने और हमबिस्तरी (संभोग) से नफ्स को रोकना हकीकी रोजा है।

खुदा की रहमत के कुर्बान ! कि फर्ज इतने से अदा हो जाता है। कि नफ्स को उन हलाल कामों से रोके! मगर सिर्फ खाने - पीने और हमबिस्तरी से रुक रहना, बाकी आजा को गुनाहों से लत-पत रखना ये ऐसा रोजा है, जिसके अन्दर जान नहीं है। ऐसा रोजा तो बच्चे और कमजोर लोग भी रख लेते हैं।

★ रोजा की नीयत :-

रोजा की नीयत का वक्त सुरज डूबने से लेकर दोपहर शुरु होने से पहले तक है। हर रोजे के लिए नीयत जरुरी है। नीयत तो दिल के इरादे का नाम है। मगर जबान से कह लेना बेहतर है।

★ रोजे के मकरुहात :-

झूठ, गीबत, चुगली, गाली देने, बेहूदा बातें करने और किसी को तकलीफ देने से रोजा मकरुह हो जाता है। रोजादार को कुल्ली करने के लिए मुँह भर पानी लेना मकरुह है। रोजा की हालत में खूशबू सूँघना तेल मालिश करना और सुर्मा लगाना मकरुह नहीं। मगर मर्दो को जीनत के लिए सुर्मा लगाना हमेशा मकरुह है और रोजा की हालत में बदरजाए औला (जरुर) मकरुह है। (बहारे, शरीअत, दुर्रे मुखतार)

रोजा में मिसवाक करना मकरुह नहीं बल्कि जैसे और दिनों मिसवाक करना सुन्नत है वैसे ही रोजा में भी मिसवाक करना मसूनन है। चाहे मिसवाक खुश्क हो, या तर (गीली) और जवाल से पहले करे, या बाद में किसी वक्त मकरुह नहीं (अनवारे शरीअत)

★ जिन चीजों से रोजा टूट जाता है :-

खाने-पीने से रोजा टूट जाता है। जब कि रोजादार होना याद हो और बीडी, सिगरेट वगैरह पीने और पान या सिर्फ तम्बाकू खाने से भी बशर्ते कि याद हो रोजा जाता रहता है। कुल्ली करने में बिला इरादा पानी हलक से नीचे उतर गया, या नाक में पानी चढाया और दिमाग तक चढ गया, या कान में तेल टपकाया, या नाक में पानी चढाई अगर रोजादार होना याद है तो रोजा टूट गया वर्ना नहीं। जानबुझकर मुंह भर कै (उलटी) की और रोजादार होना याद है तो रोजा टूट गया वर्ना नहीं। और मुंह भर ना हो तो नहीं और अगर बिला इख्तियार कै (उलटी) हो और मुँह भर हो तो रोजा न गया और अगर मुँह भर न हो लौटाने की सुरत में जाता रहा वर्ना नहीं (बहारे शरीअत)

★ जिन चीजों से रोजा नही टूटता :-

भूलकर खाने-पीने से रोजा नहीं टूटता, तेल या सुर्मा लगाने और मख्खी, धुवाँ या आटे वगैरे का गुबार (गर्दा) हलक में जाने से रोजा नहीं जाता कुल्ली की और बिल्कुल उगल दिया सिर्फ कुछ तरी मुँह में बाकी रह गयी थी थूक के साथ उसे निगल लिया या कान में पानी चला गया या खकार मुँह मे आया और खा गया अगरचे कितना ही हो रोजा न जाएगा। एहतिलाम (स्वप्नदोष) हुआ या गीबत (चुगली) की, तो रोजा न गया। अगरचे गीबत सख्त कबीरा (बडा) गुनाह है और जनाबत (नापाकी) की हालत में सुबह की बल्कि अगरचे सारे दिन जुनुब (नापाक) रहा रोजा न गया मगर इतनी देर तक जान - बुझ कर गुस्ल न करना कि नमाज कजा हो जाए गुनाह और हराम है। (अनवारे शरीअत)

★ सहरी :-

हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फर्माया - "रोजे की हर सहरी में बरकत है ! तो सहरी खाना न छोडो ! अगर कुछ न हो तो एक घूँट पानी ही पी ले । क्योंकि ? अल्लाह तआला सहरी खाने वालो पर रहमत नाजिल फर्माता है। और उसके फरिश्ते, सहरी खानेवाले। के लिए दुआ खैर करते हैं"। (हदीस शरीफ)

एक दूसरी हदीस में है कि -

"हमारे और अहले किताब के रोजों में फर्क सहरी खाने का है।" (हदीस शरीफ)

★ इफ्तार :-

इफ्तार में जल्दी सुन्नत है और बाईसे बरकत है। जब सूरज डूब जाने का यकीन हो जाए तो इफ्तार कर लिया जाए खुजूर या छोहारे से इफ्तार करें। यह न हो तो पानी से करें। खाने-पीने में इस तरह न लग जाए कि नमाज में देरी हो। जमाअत को खाने-पीने पर कुर्बान न करें। आज-कल अक्सर लोग इस बिमारी में मुब्तिला हैं। "बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहमा" पढकर रोजा इफ्तार करें, इसके बाद इफ्तार की दुआ पढें।

★ एतकाफ :-

जिसने रमजान शरीफ में १० दिन का एतकाफ कर लिया, ऐसा है जैसा २ हज और २ उमरे कर लिये। रमजान की २१ वीं रात से ईद का चाँद रात तक का एतकाफ सुन्नते किफाया है। चाँद देखकर नमाजे मगरिब के बाद मस्जिद से बाहर निकलें।

★ सदका-ए फित्र :-

हर मलिके निसाब पर अपनी तरफ से और अपनी हर नाबालिग औलाद की तरफ से एक सदका-ए फित्र ईदुल फित्र के दिन वाजिब होता है। मगर ईदुल फित्र से पहले दे देना ज्यादा बेहतर है। सदका-ए फित्र गेहूँ एक आदमी की जानिब से २ कि. ५० ग्राम है। जिन लोगों को जकात देना जाइज है उनको सदका-ए फित्र भी देना जाइज हैं। गेहूँ की जगह उसकी कीमत रुपया दे देना बेहतर है।

★ तरावीह की नमाज :-

तरावीह की बीस रकअतें हैं। बीस रकअत तरावीह में हिकमत यह है की सुन्नतों से फराईज और वाजिबात की तकमील होती है। और सुबह से शाम तक फर्ज व वाजिब कुल बीस रकअतें है। तो मुनासिब हुआ की तरावीह भी बीस रकअतें हो ताकि मुकम्मल करने वाली सुन्नतों कि रकअत और जिनकी तकमील होती है। यानी फर्ज व वाजिब की रकअत की तादाद बराबर हो जाए। बीस रकअतें दस सलाम से पढी जाऐं यानी हर दो रकअत पर सलाम फेरे और हर तरविहयह यानी चार रकअत पर इतनी देर बैठना मुस्तहब है कि जितनी देर में चार रकअतें पढी हैं।

★ तरावीह की नीयत :-

नीयत इस तरह करें "नीयत की मैंने दो रकअत नमाजे तरावीह की सुन्नत रसूलुल्लाह की अल्लाह तअला के लिए (मुक्तदी इतना और कहे पीछे इस इमाम के) मुँह मेरा तरफ काबा शरीफ के अल्लाहु अकबर !"

हर ४ रकाअत तरावीह के बाद चुप बैठा रहे या कुछ पढे इख्तियार है। चाहे कलिमह या दुरूद शरीफ पढें। या वह तसबीह पढे जो आमतौर पर पढी जाती है।

★ तरावीह की तसबीह :-

"सुब्हानल मलिकिल कुद्दूस, सुब्हा-न जिलमुल्कि वल म-ला-कूत सुब्हा-न जिलइज्जति वलअजमति वलहैबति वलकुदरति वलकिबरियाई वल ज-ब-रुत, सुब्हानल मलिकिल हय्यिल्लजी ला यनामु वलायमूत, सुब्बूहुन कुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइकति वर्रुह अल्लाहुम-म अजिरना मिनन्नार, या मुजीरु या मुजीरु या मुजीर" पढे।

★ कुरआन मजीद खत्म करना सुन्नते मुअक्कादा है :-

पूरे महीने की तरावीह में एक बार कुरआन मजीद खत्म करना सुन्नते मुअक्कदा है। और दो खत्म करना अफजल है। और तीन बार खत्म करना मजीद (ज्यादा) फजीलत रखता है। बशर्ते कि तकलीफ न हो। मगर एक बार खत्म करने में मुक्तदियों का लिहाज नहीं किया जाएगा। बिला उज्र बैठकर तरावीह पढना मकरुह है। बल्कि बाज फुकहाये किराम के नजदीक तो नमाज होगी ही नहीं (बहारे शरीअत)

कुछ लोग शुरू रकअत से शरीक नहीं होते बल्कि जब इमाम रुकु में जाने लगता है तो शरीक हो जाते हैं। ऐसा हरगिज नहीं करना चाहिए ! कि इसमें मुनाफिकीन से मुशाबहत पाई जाती है। (अनावरे शरीअत)

★ ईदुलफित्र की नमाज :-

पहले इस तरह नीयत करें (नीयत की मैंने दो रकअत नमाज वाजिब ईदुलफित्र की ६ तकबीरों के साथ अल्लाह तआला के लिए (मुक्तदी इतना और कहे पीछे इस इमाम के) मुँह मेरा तरफ काबा शरीफ के, फिर कानों तक हाथ उठाये और अल्लाहु अकबर कहकर हाथ बांध ले, फिर सना पढे, फिर कानों तक हाथ ले जाए और अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ छोड दे, फिर हाथ उठाए और अल्लाहु अक्बर कहता हुआ हाथ छोड दे, फिर तीसरी बार हाथ उठाए और अल्लाहु अकबर कहकर हाथ बाँध ले। इसके बाद इमाम अहिस्ता 'अऊजु बिल्लाह व बिस्मिल्लाह' पढकर बुलंद आवाज से अलहम्दु के साथ कोई सूरत पढे, फिर रुकू और सजदे से फारिग हो कर दूसरी रकअत में पहले अल्हम्दु के साथ कोई सुरत पढे। फिर तीन बार कानों तक हाथ ले जाए और हर बार अल्लाहु अकबर कहे और किसी बार हाथ न बाँधे, और चौथी बार बगैर हाथ उठाये अल्लाहु अकबर कहता हुआ सज्दे में जाए बाकी नमाज दूसरी नमाजों की तरह पूरी करें। सलाम फेरने के बाद दो खुतबे इमाम पढे। फिर दुआ मांगे, खुतबये ऊला पहला खुतबा शुरू करने से पहले इमाम मिमबर पर खडा होकर ५ बार आहिसता अल्लाहु अकबर कहे कि यह सुन्नत है।

★ ईदुल फित्र के दिन कौन - कौन से काम मुस्तहब हैं :-

हजामत बनवाना, नाखुन तरशवाना, गुस्ल करना, मिस्वाक करना अच्छे कपडे पहिनना, खुशबू लगाना, सुबह की नमाज मुहल्ला की मस्जिद में पढना, ईदगाह सवेरे जाना, ईदगाह तक पैदल जाना, दूसरे रास्ते से वापस आना, नमाज के लिए जाने से पहले सदका-ए फित्र अदा करना, ईदगाह जाने से पहले ताक तीन, या पाँच, या सात खुजूरें खा लेना और खुजूरें न हों तो कोई मीठी चीज खाना, खुशी जाहिर करना, आपस में मुबारकबाद देना और ईदगाह इत्मिनान विकार के साथ नीचे निगाह किए हुए जाना। यह सब बातें ईदुल फित्र के दिन मुस्तहब हैं।

रोजा रखने की नीयत :-

"नवैतु अन असू-म गदन लिल्लाहि तआला मिन फर्जि रमजान !"

इफ्तार की दुआ :-

"अल्लाहुम-म इन्नी ल-क सुमतु व- बि- क आमन्तु व अलै -क तवक्कलतु व अला रिजकि-क - अफतरतु फतकब्बल मिन्नी !"

रोजा खोलने से पहले यह दुआ बार-बार पढे :-

"या वासिअल फदली इगफिरली !!"

चाँद देखकर कर यह दुआ पढे :-

"अल्लाहुम्-म अहिल्लहु अलयना बिलअम्नि वल ईमाम वस्सलमति वल इस्लाम, रब्बी व रब्बुकल्लाहु या हिलाल !"

✲ उम्रभर रोजेदार ✲

हुजूर अलैहिस्सलाम ने फर्माया कि, "जिसने रमजान शरीफ के रोजे रखखे, फिर शव्वाल के ६ रोजे रखखे, तो उम्र भर के रोजों की तरह है।" (मुस्लिम शरीफ)

अल्लाह तआला एक नेकी के बदले १० नेकियाँ अता फर्माता है। रमजानके ३० रोजों को १० गुना कीजिए ! ३० हुए और शव्वाल के ६ रोजों को दस गुना किजिए ! ६० हुए । और एक साल में ३६० दिन होते हैं । बन्दा हर साल ऐसा ही करे तो गोया उम्र भर रोजे रखखे।

★ नाक - कान के बालों के फायदे ★

हुजूर नबी-ए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम न फर्माया-

"जो बाल नाक और कान के अंदर होते हैं वह कोढ से महफूज रखते हैं"

आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फर्माया - "नाक और कान के अंदर से बाल मत उखाडा करो क्योंकि उस से आकला की बीमारी पैदा होती है। (आकला नाक में जख्म होने को कहते हैं) हाँ ! अगर ज्यादा बढे हुए हों तो काट दिया करो।" (नुजहतुल मजालिस)

आशूरा (१० वी मुहर्रम की रात) की नफ्ली नमाजें

★ ४ रकात (एक सलाम से) तारीका:-
हर रकात में "अल्हम्दु" के बाद, एक बार "आयतलकुर्सी !" और ३ बार "कुल हुवल्लाह" सलाम के बाद १०० बार "कुल हुवल्लाह"

★ २ रकात, तारीका:-
हर रकात में "अल्हम्दु" के बाद ३ बार "कुल हुवल्लाह"

★ ४ रकात, तारीका:-
हर रकात में "अल्हम्दु" के बाद ३ बार "कुल हुवल्लाह"

★ ८ रकात (२-२ करके) तारीका:-
हर रकात में "अल्हम्दु" के बाद २५ बार "कुल हुवल्लाह" ८ रकात के बाद, ७० बार दुरुद शरीफ और ७० बार इस्तिगफार

★ ४ रकात (एक सलाम से) तारीका:-
पहली रकात में "अल्हम्दु" के बाद, १ बार सूरह "आयतल कुर्सी"
दुसरी रकात में "अल्हम्दु" के बाद ३ बार "तकासुर"

तीसरी रकात में "अल्हम्दु" के बाद सूरह "काफिरुन"

और चौथी रकात में "अल्हम्दु" के बाद "कुल हुवल्लाह" एक-एक बार।

इसका सवाब : हजरत सैयदना इमाम आली मकाम शहीदे आजम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हु को बख्शे ।

★ २ रकात, तारीका:-
हर रकात में "अल्हम्दु" के बाद ३ बार "कुल हुवल्लाह" इसका सवाब हजरते फातिमा जहरा रजियल्लाहु अन्हा को बख्शे।

★ ४ रकात (एक सलाम से) तारीका:-
हर रकात में "अल्हम्दु" के बाद ५ बार "कुल हुवल्लाह" इसका सवाब शोहदा-ए कर्बला रजियल्लाहु अन्हुम को नज्र करे।

★ २ रकात, तारीका:-
हर रकात में "अल्हम्दु" के बाद, ३ बार सूरह "कुल हुवल्लाह" इसका सवाब अपने माँ-बाप को बख्शे।

अहले बैते पाक की सच्ची मुहब्बत

अहले बैते पाक की सच्ची महब्बत यह है कि दिल उनपर फिदा हो, उनकी इत्तिबा में उनके जैसे आमाल करने की कोशिश हो। नमाज की सख्त पाबन्दी की जाया, सब्र व शुक्र का दामन कभी न छोडे, उनके नक्शे कदम को अपने लिए रहबर बनाये, आशूरा की रात को नफ्ली नमाजों में गुजारे और दिन को रोजा रखे, उस दिन ज्यादा से ज्यादा सदका व खैरात करे, कुरआन पाक की तिलावत में दिन बिताये इस्लाम की इज्जत व हुर्मत को दुश्मनोने इस्लाम के नापाक इरादों के लिए नाकाम बनाने के लिए अपने तन,मन, धन की कुर्बानी देने के लिए वक्त तय्यार रहे। नाअहल, निकम्मे को कभी वोट न दे कि हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हु ने यजीद को अपना वोट न दिया, सर दे दिया। शैतीनी ताकत के सामने कभी न झुके, हमें सबक दिया कि इस्लाम की इज्जत व हुर्मत में इस्लामी कानून को टूटता हुआ देखे तो जान दै दे मगर इस्लाम की शान में फर्क न आने दे, मुसीबत में घबरा न जाये।

बहरेहाल ! उनकी जैसी जिन्दंगी गुजारने की कोशिश करे यह इस्लामी तहजीब नहीं सिर्फ आशूरा के दिन ताबूत बना कर नाच कूद लिया, सर या सीना या पीट लिया या पेट पीट लिया, घोडा निकाल लिया, मातम कर लिया, जंजीर से सीना लहूलहान कर लिया, और समझे कि साल भर के गुनाहों का कफ्फारा हो गया, जन्नत का टिकट मिल गया, दोस्तो यह सच्ची महब्बते अहले बैत नहीं।यह यजीदियों

की नकल है। हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्ह के पास जंजीर न थीं। उन्होंने अपना सीना न कूटा था। यजीदियों का सर कुचला था। उनकी जबान पर हाय वैय न थी बल्कि कुरआन था, उन्होंने आशूरा के दिन नमाज न छोडी थी खाना पीना छोडा था काश ! आज हमारे हाथ में जंजीर के बजाए दीन इस्लाम के दुश्मनों के मुकाबला में तलवार होती।

लतीफा :

किसी ने हजरता अमीरे मिल्लत कुतबुल वक्त हजरत सय्यद जमाअत अली शाह साहिब किब्ला अलैहिर्रहमह वर्रिज्वान की खिदमत में अर्ज किया कि कुछ लोग हमारे यहाँ हजरत इमाम हूसैन रजियल्लाहु तआला अन्ह का बनावटी जनाजा लेकर सीने पीटते हैं तो आपने फर्माया " ये अकल मन्द यजीद का जनाजा बनाते तो उस पर चार जूते हम भी मार आते। फिर फर्माया कि उसने तो हिन्दू ही अकलमन्द रहे कि वे दसहरे के दिन दुश्मन (रावण) का ताबूत बनाकर उसे गोली का निशाना बनाते हैं, उसके गले में जूतों और चप्पलोंय का हार डालते और जलाते हैं। रामचंन्द्र की अर्थी नहीं निकालते।

शबे मेराज के आमाल : नफ्ली नमाज और रोजा

★ **६ रकात (२-२ करके) तरीका :-** हर रकात में "अल्हम्दु" के बाद ७ बार "कुल हुवल्लाह" पढे। ६ रकात पढने के बाद ५० बार दुरुद शरफ पढे। तमाम दीनी व दुनियावी जरूरतें पूरी होंगी और ७० हजार गुनाह मुआफ होंगे हैं।

★ **२ रकात :-** पहली रकात में "अल्हम्दु" के बाद एक बार, सूरह "अलम नशरह"

दूसरी रकाते में "अल्हम्दु" के बाद सूरह "कुरैश" पढे। ये नमाज पढने से तमाम औलिया अल्लाह के साथ नमाज पढने का सवाब मिलता हैं।

★ **१० रकात (२-२ करके):-** हर रकात में "अल्हम्दु" के बाद ३ बार, सूरह "काफिरुन" ३ बार "कुल हुवल्लाह" पढे।

१० रकात के बाद बैठकर एक बार कलिमा-ए तमजीद पढे, फिर यह दुआ पढे - "अल्लाहुम्-म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिंव व अला आलिहित्ताहिरी-न वला वहौ-ल वला कूव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीइल अजीम।"

अल्हाह तआला हर रकात के बदले १००० रकात का सवाब अता फर्माएगा।

★ **रोजा की फजीलत:-** जो कोई २७ वीं रजब को रोजा रख्खे उसको जन्नत की एक नहर से पानी पिलाया जाएगा जो शहद से ज्यादा मीठा, बर्फ से ज्यादा ठन्डा और दूध से ज्यादा उजला होगा। और अल्लाह तआला उसको जहन्नम की आग से नजात अता फर्माएगा और जन्नत में दाखिल फर्माएगा।

★ **रजबी शरीफ का जल्सा:-** रजब की २७वीं रात में मेराज शरीफ के बयान के लिए मजलिस कायम करना जिसको रजबी शरीफ कहा जाता है जाइज है।

और चूंकि यह जल्सा इस रात में रतजगा और जिक्रे इलाही का बेहतरीन जरिया है इसलिए जल्सा भराने वाले, सुनने वाले, सुनाने वाले सभी को इन्शा अल्लाह तआला अज्रे अजीम मिलेगा।

★ **४ महीनों को जीनत:-** कहा गया है कि, अल्लाह तआला ने महीनों में से, ४ महीनों को जीनत बख्शी हैं।

"१) जिलकादा २) जिलहिज्जा ३) मुहर्रम और ४) रजब।"

इसीलिए अल्लाह तआला का फर्माने आलीशान है कि -

"इनमें से (महीनों में से) ४ महीने हराम हैं। यानी एहतरम वाले हैं।"

इनमें ३ मिले हुए हैं और एक अकेला हैं। और वह हैं, माह रजब।

शाबान में हर हिकमत वाला काम बाँट दिया जाता है !!!

''शाबान'' के माना हैं घाटी, वगैरह। क्योंकि इस महिने में आम तौर पर खैर व बरकत की झमाझम बरखा होती है। इसलिए इसे, ''शाबान'' कहा जाता है। जिस तरह घाटी पहाड़ का रास्ता होती है, इसी तरह यह महीना खैर व बरकत की राह है।

माह शाबान की १५ वीं रात का नाम, ''शबे बरात'' यानी ''नजात की रात'' है। इस बरकत वाली रात के ४ नाम है:

* लैलतुल बराअह (नजात वाली रात)
* लैलतुर्रहमह (रहमत वाली रात)
* लैलतुल मुबारका (बरकत वाली रात)
* लैलतुस्सक (नजात का चेक मिलने वाली रात)

कुरआन पाक में इस मुबारक रात का जिक्र इस तरह है:

इस रात में हमारे हुक्म से हर हिकमत वाला काम बाँट दिया जाता है। (सूरह दुखान)

यानी शबे बरात में बन्दों की रोजियाँ, उनकी मौतें और पैदाइश, लडाईयाँ, जलजले, हादसात, वगैरह साल भर होने वाले तमाम वकियात के अहकाम अलग-अलग तकसीम कर दिए जाते हैं। और हर काम के फरिश्तों को उनका काम सौंप दिया जाता है। जिसकी वह साल भर तक तामील करते रहते हैं। (सावी, वगैरह)

★ शाबान के हुरूफ :-

हुजूर सरकार गौस पाक रजियल्लाहु तआला अन्ह, अपनी किताब गुनयतुन्तालिबीन में फर्माते है:

''शाबान'' के ५ हुरूफ हैं, और हर हर्फ से एक माना (अर्थ) निकलता है। फर्माते हैं, माहे शाबान का:

* शीन : शराफत लेकर
* ऐन : ओलू लेकर (बुलन्दी)
* बे : बिर्र यानी नेकी लेकर
* अलिफ : उल्फत लेकर, और
* नून : नूर, लेकर आता है। गोया, इस महीन में शराफत व बुलन्दी, नेकी व उल्फत और नूरका समाँ बंध जाता है। और खुशनसीब हैं वे लोग जो इस महीने की बरकतों से मालामाल होते हैं।

★ रहमत के ३०० दरवाजे :-

हुजूर अलैहिस्सलाम ने फर्माया: यह, वह रात है! जिस में अल्लाह तआला अपनी रहमत के ३०० दरवाजे खोलता है और हर उस आदमी को बख्श देता है, जो मुशरिकीन में से न हो। मगर जादूगार, और हमेशा शराब पीने वाला, सूद खाने वाला, जिनाकार को इस रात भी नहीं बख्शा जाता है। जब तक कि वे तौबा न कर लें। (गुनयतुत्तालिबीन)

गौर करने की बात है! कि जिस रात अल्लाह तआला के ३०० रहमत के दरवाजे खोले जायें, उस रात भी अगर गुनाहों में रात-दिन लतपत रहने वालों की बख्शिश न हो तो खुद ही फैसला करलें कि कैसा वह बदनसीब व बदबख्त आदमी है। मुसलमानों को चाहिए कि इस रात खूब अल्लाह तआला की बारगाह में रोयें, गिडगिडीयें, तौबा व इस्तिगफार करें, रातभर खुदा की इबादत करें, कबरों की जियारत करें, और सुबह रोजा रखें।

इस महीने में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम बहुत ज्यादा रोजा रखते थे, कभी पूरा महीना रखते थे, कभी कुछ रोजे छोड दिया करते थे। इस से इस महीने में रोजा रखने की अहमियत का पता लगता है।

★ इस रात की नमाजे :-

इस रात में १०० रकातें पढेंगें तो, अल्लाह तआला १०० फरिश्तों को भेजेगा, जिसमें से ३० फरिश्ते जन्नत की खुशखबरी सुनायेंगे, ३० फरिश्ते दोजख से नजात की बशारत सुनायेंगे, और ३० फरिश्ते दुनियावी आफतों- बलावों को टालते रहेंगे और १० फरिश्ते शैतान के मकर व फरेब से बचाते रहेंगे। (सावी)

★ **नोट :-** इस नमाज में कोई सूरह खास नहीं जो याद हो पढे।

★ **बाद नमाजे मगरिब :-**

६ रकातें पढें और हर दो रकात पर सलाम फेरें। और हर २ रकात के बाद, सूरह यासीन एक बार, या कुलहुवल्लाह २१ बार पढें।

❋ पहली बार, सूरह यासीन, या सूरह इख्लास, उम्र में ज्यादती के लिए।

❋ दूसरी बार, रोजी में तरक्की के लिए। और

❋ तीसरी बार, बलावों के टलने के लिए। फिर दुआए निस्फ शाबान पढें। अगर दुआये निस्फ शाबान न जानते हों तो अपनी मस्जिद के पेश इमाम साहिब से पूछ लें।

★ **इशा की नमाज के बाद :-**

१२ रकातें पढें। हर रकात में ''सूहर फातिहा'' के बाद १० बार कुलहुवल्लाह पढे और नमाज के बाद १०-१० बार तीसरा और चौथा कालिमा पढे। और १०० बार दुरुद शरीफ पढे। यह दुआ जितनी बार हो सके पढें ! :-

''अल्लाहुम-म-इन्नी असअलु-कल अफ्-व-वल आफि-य-त वल मुआफातदाइमह फिदुनया वल आखिरह।''

★ **ईमान की हिफाजत :-**

२ रकातें नमाज ईमान की हिफाजत के लिए नमाजे मगरिब के बाद पढे। पहली रकात में ''सूरह फातिहा'' के बाद ''सूरह कुलहुवल्लाहु'' ३ बार और ''सूरह फलक'' १ बार पढे। और दूसरी रकात में भी ऐसे ही, फर्क सिर्फ इतना सा है कि दूसरी रकात में फलक के बजाय सूरह नास पढे। सलाम फेरने के बाद ईमान की हिफाजत की दुआ माँगें।

★ **जमानते फातिमी :-**

इशा की नमाज के बाद ८ रकात एक सलाम के साथ पढे और उसका सवाब हजरते फातिमा खातूने जन्नत रजियल्लाहु तआला अन्हा की रुहे पाक को हदया करे। हजरते फातिमा रजियल्लाहु तआला अन्हा फर्माती हैं कि जन्नत में कदम न रखूंगी जब तक अपने नफ्ल पढनेवाले की शफाअत न करा लूँ, तरीका यह है कि ८ रकात नवाफिल की हर रकात में 'सूरह फातिहा' के बाद 'कुल हुवल्लाह' ११-११ बार पढे।

★ **४० हुराने जन्नत :-**

जो कोई १४ वी तारीख को सूरज डूबने के वक्त ४० बार ''ला हौ-ल वला कूव्व-त इल्ला बिल्ला हिल अलीइल अजीम'' और १०० बार दुरुद शरीफ पढेगा तो अल्लाह तआला उसके ४० साल के गुनाह बख्श देगा और ४० हूराने जन्नत उसकी खिदमत के लिए मुकर्रर फर्माएगा।

★ **शबे बराअत का गुस्ल :-**

जो कोई शाबान की १५ वी रात को इबादत की नीयत से नहाये (शाम के बाद नहाना ज्यादा अच्छा है) तो गुस्ल ले पानी के हर कतरे के बदले उसके लिए ७०० रकात नमाज का सवाब लिखा जाएगा। फिर गुस्ल के बाद एक बार 'आयतल कुर्सी' और ३ बार 'कुलहुवल्लाह' पढे फिर तहीयतुल वुजू पढने के बाद ८ रकात नमाजे नफ्ल जिसकी हर रकात में 'सूरह फातिहा' के बाद १ बार 'सूरह इन्ना अनजलना' और 'कुलहुवल्लाह' २५ बार पढे। जो शख्स यह नमाज पढेगा उसके तमाम गुनाह ऐसे धुल जायेंगे जैसे अभी अभी माँ के पेट से पैदा हुआ है। (मफहूमे हदीस)

★ **इस रात की फातिहा :-**

ये रात अपने मुर्दो और दूसरे बुजुर्गो को ईसाले सवाब और नियाज करने के लिए खास रात है। आज की रात मुर्दो की रुहें अपने घरों के दरवाजे पर आती हैं और घर वालों को पुकारती हैं :-

''ऐ घर वालो ! हमारे ऊपर रहम करो! हमारे लिए कुछ सदका व खैरात करो ! हम सवाब के मुहताज हैं, हमारे नामाए-आमाल खत्म हो चुके और तुम्हारे आमाल जारी हैं।''

अगर रुहें कुछ नहीं पाती हैं तो मायूसी के साथ वापस चली जाती हैं!

शबे कद्र की नफ्ली नमाजें और दुआयें व वजीफे

★ **नबियों की इबादत का सवाब :-** १२ रकात नमाज (३ सलाम से) पढे। हर रकात में सूरह फातिहा के बाद, ''इन्ना अन जलनाहु'' १-१ बार, ''कुलहुवल्लाह'' १५-१५ बार पढे। सलाम के बाद ७० बार ''अस्तगफिरुल्ला-ह रब्बी मिन कुल्लि जम्बिंव व अतूबु इलैह'' पढे। नबियों की इबादत का सवाब मिलेगा ।

★ **अगले-पिछले गुनाह माफ :-** २ रकात नमाज पढे, हर रकात में सूरह फातिहा के बाद, ३-३ बार ''इन्ना अन जलनाहु'' और ५-५ बार ''कुलहुवल्लाह'' सलाम के बाद २७ बार ''कुलहुवल्लाह'' पढ़कर गुनाहों की बख्शिश मांगे । इन्शा अल्लाह तआला अगले-पिछले सभी गुनाह बख्शे जायेंगें।

★ **अजाबे कब्र से नजात :-** ४ रकात (२ सलाम से) हर रकात में सूरह फातिहा के बाद ''अलहाकुमुत्तकासुर'' १-१ बार, ''कुलहुवल्लाह'' ३-३ बार पढे।

अल्लाह तआला मौत की सख्ती आसान फर्माएगा अजाब कब्र से भी नजात हासिल होगी।

★ **माँ-बाप और खुद की मगफिरत :-** २ रकात, हर रकात में अल्हम्दु लिल्लाहि के बाद कुल हुवल्लाह ७-७ बार पढे। सलाम के बाद ७० बार ये तसबीह पढे :

'' अस्तगफिरुल्ला हल्लजी ला इला-ह इल्ला हुवल हय्युल कैयूमु व अतूबु इलैह।''

इन्शा अल्लाह ! इस नमाज के पढने वाले को मुसल्ले से उठने से पहले उसको, उसके माँ-बाप की बख्शिश हो जायेगी। और मरने से पहले अपनी आँखों से जन्नत का नजारा कर लेगा।

★ **जन्नत का एक शहर अता हो। :-** २ रकात, इस तरह पढे कि, हर रकात में 'अल्हम्दु' के बाद १ बार 'इन्ना अनजलानाहु' ३ बार 'कुलहुवल्लाहु' पढे । तो शबे कद्र का सवाब हासिल होगा, एक शहर जन्नत में दिया जाएगा जो पूरब से पच्छिम तक लम्बा होगा।

★ **सकरात मौत आसान हो :-** ४ रकात (एक सलाम से) इस तौर कि, ''हर रकात में 'अल्हम्दु' के बाद ३ बार 'इन्ना अनजलानाहु' ७ बार 'कुलहुवल्लाहु' पढे । अल्लाह तआला मौत की सकरात (सख्ती) आसान कर देगा। कब्र का अजाब दूर कर देगा।

★ **बेशुमार महल अता हो :-** ४ रकात (एक सलाम से) इस तरह, ''हर रकात में 'अल्हम्दु' के बाद १ बार ''अलहाकुमुत्तकासुर''और ३ बार 'कुलहुवल्लाहु' पढे । जन्नत में ४ सुतून (खम्भे) मिलेंगे, जिनके हर सुतून पर हजार महल होंगें।

★ **तिलावते सातों हा-मीम :-** सातों ''हा-मीम'' पढे। ये हा-मीम कब्र के अजाब से छुटकारा और मगफिरत के लिए अफजल हैं।

सातों ''हा-मीम'' इन पारों में है : २४ वाँ, २५ वाँ, २६ वाँ

रोजे में थूकने का मसला

रमजान में कुछ लोगों को रोजा रखने की हालत में बार-बार थूकते देखा गया है। उनसे पूछने पर मालूम हुआ कि उनकी समझ से अगर थूक गले के नीचे चला जाएगा तो रोजा टूट जाएगा।

यह सरासर उनकी गलत फहमी है। थूक गले के नीचे जाने से रोजा नहीं जाता। हाँ ! किसी बाहरी चीज जैसे धागा या और कोई चीज मुंह में जाने से कि उसका मजा, लज्जत आये और वह थूक गले के नीचे चला जाये तो रोजा टूटता है।

लेकिन कुदरती तौर बनने वाले थूक हलक के नीचे चले जाने से रोजा नहीं टूटता इसलिए रोजा दारों को चाहिए कि इधर उधर बार-बार थूकने से बचें। जिस गह लोगों का बैठना- उठना, आना-जाना रहता है। वैसे भी वहाँ थूकना तहजीब के खिलाफ है।

खैर व बरकत वाली बातें और प्यारी-प्यारी दुआयें

✲ जब कोई काम शुरू करो, तो कहो !

"बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम!"

यानी, "अल्लाह तआला के नाम से शुरू जो बडा मेहरबान-रहमत वाला है।"

✲ जब छींक आये, तो कहो !

"अल्हम्दु लिल्लाह !"

यानी, "अल्लाह तआला का शुक्र है।"

✲ जब किसी को अल्लाह के नाम दो तो कहो :-

"फी सबीलिल्लाह!"

यानी, "अल्लाह तआला की राह में।"

✲ जब कुछ करने का सरादा हो, तो कहो!

"इन्शाअल्लाह!"

यानी, "अगर अल्लाह ने चाहा ।"

✲ जब कोई अच्छी खबर सुनो, ता कहो :-

"सुबहानल्लाह!"

यानी, "अल्लाह तआला पाक है।"

✲ जब किसी को तकलीफ में देखों, तो कहो :-

"या अल्लाह!"

यानी, "ऐ अल्लाह ! "

✲ जब किसी की तारीफ करनी हो, तो कहो :-

"माशा अल्लाह !"

यानी, "जो अल्लाह ने चाहा ! "

✲ जब सोकर उठो, तो कहो :-

"अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी अहयाना बअ-द मा अमातना व इलैहिन्नुशूर !"

यानी, "सब तारीफे अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने हमें मारकर जिन्दगी बख्शी और हमें उसी तरफ लौटना हैं!"

✲ जब सोने लगो, तो कहो :-

"अल्लाहुम-म बिस्मि-क अमूतु व अह-या!"

यानी, "ऐ मेरे माबूद ! तेरे ही नाम पर मरता और जीता हूँ !"

✲ जब खाना शुरू करो, तो कहो :-

"बिस्मिल्लाहि व अला ब-र-कतिल्लाह!"

यानी, "अल्लाह तआला के नाम और बरकत से शुरू!"

✲ जब खाना खा चुको, तो कहो :-

"अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी, अतअमना, व सकाना, व जअलना मिनल मुस्लिमीन !"

यानी, 'तमाम तारीफें अल्लाह तआला के लिए जिसने हमको खिलाया, पिलाया और हमें मुसलमानों में से बनाया !"

✲ जब किसी दूसरे के यहाँ खाओ, तो कहो :-

"अल्लाहुम-म अतअिम मन अतअमनी वअसकी मन सकानी !"

यानी "ऐ- अल्लाह ! जिसने मुझे खिलाया तू उसे खिला और जिसने मुझे पिलाया तू उसे पिला !"

✲ जब किसी मुसलमान भाई को हंसता देखो, तो कहो :-

"अजहकल्लाहु सिन्नक !"

यानी, "अल्लाह तआला तुझे हंसता ही रख्खे !"

✲ जब कोई अहसान करे, तो कहो :-

"जजाकल्लाहु खैरा !"

यानी, "अल्लाह तुझको बेहतर बदला अता फर्माये !"

✲ जब गुस्सा आये, तो कहो :-

"अऊजु बिल्लाहि मिनश्शैता निर्रजीम !"

यानी, "अल्लाह तआला की पनाह चाहता हूँ मरदूद शैतान से !"

✲ जब अपना मुँह आइना मे देखो, तो कहो:-

"अल्लाहुम-म अन्-त हस्सन्-त खलकी, फहस्सिन खुलकी !"

यानी, "इलाही ! तूने मेरी सूरत अच्छी बनायी, तो मेरी सीरत को भी अच्छी कर दें !"

✲ जब किसी को रुख्सत करो, तो कहो :-

"फी अमानिल्लाह !"

यानी, "अल्लाह तआला की हिफाजत में !"

✲ जब कोई नाजाइज बात सुनो, तो कहो :-

"नऊजुबिल्लाह !"

यानी, "अल्लाह तआला की पनौह चाहता हूँ !"

✲ **जब गलत काम पर अफसोस जाहिर करना चाहो, तो कहो :-**

"अस्तगफिरुल्लाह !"

यानी, "अल्लाह तआला से बख्शिश चाहता हूँ !"

✲ **जब मदत दरकार हो, तो कहो :-**

"या रसूलल्लाह !" (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम)

यानी, "ऐ अल्लाह तआला के रसूल !"

✲ **जब घर से निकालो, तो कहो :-**

"बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अलल्लाह !"

यानी, "अल्लाह के नाम के साथ, मैंने अल्लाह तआला पर भरोसा किया!"

✲ **जब मस्जिद में दाखिल हो, तो कहो :-**

"अल्लाहुम्मफ तह ली अबवा-ब रहमतिक !"

यानी, "ऐ अल्लाह ! मेरे लिए रहमत के दरवाजे खोल दे !"

✲ **जब मस्जिद से निकलो, तो कहो :-**

"अल्लाहुम्-म इन्नी असअलु-क मिन फदलि-क व रहमतिक !"

यानी, "ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे तेरा फज्ल मांगता हूँ और तेरी रहमत !"

✲ **जब पाखाना (संडास) करने जाओ , तो कहो :-**

"अल्लाहुम्-म इन्नी अऊजु बि-क मिनल खुबुसि वल खबाइस !"

यानी, "इलाही ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ! खबीस जिन्नों औंक जिन्नियोंसे !"

✲ **जब संडास घर से बाहर आओ, तो कहो :-**

"अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज-ह-ब अन्निल अजा व आफानी ।"

यानी, "सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं, जिसने मुझसे तकलीफ को दूर किया और मुझको आफियत दी ।"

✲ **जब कबरिस्तान जाओ , तो कहो :-**

"अस्सलामु अलैकुम या अहलल कुबूरि यग फिरुल्लाहु लना व-लकुम व-अनतुम स-ल-फुना व नहनु बिल असर ।"

यानी, सलाम हो तुम पर, ऐ कब्र वालो ! अल्लाह तआला हमें और तुम्हें बख्शे ! तुम आगे जा चुके हो ! और हम तुम्हारे पीछे आने वाले हैं ।"

✲ **जब वुज़ू करना शुरू करो, तो कहो :-**

"बिस्मिल्लाहिल अजीमि वल्हम्दु लिल्लाहि अला दीनिल इस्लाम।"

यानी, "अल्लाह तआला के नाम से शुरू जो अजमत वाला है। तमाम तारीफें अल्लाह तआला के दीने इस्लाम के ऊपर।"

✲ **जब सवारी पर बैठ जाओ, तो कहो :-**

"अल्हम्दु लिल्लाहि सुब्हा-नल्लज़ी सख्ख -र लना हाजा वमा कुन्ना लहू मुकरिनीन। व इन्ना इला रब्बिना लमुनकलिबून ।"

यानी, "शुक्र है अल्लाह तआला का, पाक है वह जिसने इस को हमारे कब्जा में किया, वरना हम उसको काबू में करने वाले न थे और हम अपने परवर दिगार की तरफ लौटने वाले हैं।"

✲ **जब नींद न आये तो ये दुआ पढे :-**

"अल्लाहुम-म गारतिन्नुजूमु व ह-द अतिलअुयूनु व अन-त हय्युन कय्यूमुन ला तअ खुजु -क सि-न तुन व लानौमुन या हय्यु या कय्यूमु अहदि लैली व अनिम ऐनी।"

यानी, "ऐ अल्लाह तआला ! तारे धुंधले हो गए और आँखों ने आराम लिया और तू आप जिन्दा औरों को काएम रखने वाला है और न तुझे ऊँघ आये और न नींद। ऐ आप जिन्दा औरों को काएम रखने वाले ! मेरी रात को पुर सुकून फर्मा ! और मेरी आँख को सुला दे।"

✲ **जब बूरा ख्वाब देखे तो ये दुआ पढे :-**

"अल्लाहुम-म इन्नी अऊजुबि-क मिन अ-म लिश्शैतानि व सय्यिआतिल अहलाम।"

यानी "ऐ अल्लाह तआला ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ शैतानी हरकत से और बुरे ख्वाबों से।" और

"अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीमि व शर्रि हाजिहिर्रुया।"

यानी, "पनाह चाहता हूँ मैं अल्लाह तआला की शैतान मरदूद से और इस ख्वाब की बुराई से।"

✲ जब गुस्लखाने में जाना हो तो ये दुआ पढे :-

"अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-कल जन्न त व अऊज़ुबि-क मिनन्नार।"

यानी, "ऐ अल्लाह तआला मैं तुझ से जन्नत मांगता हूँ और तेरी पनाह चाहता हूँ जहन्नम से।"

✲ जब आजान में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का नाम पाक सुनो तो ये दुआ पढे :-

"मरहबन बिहबीबी व कुर्रति अैनी मुहम्मदिब्नि अब्दिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।"

यानी, "शादमानी हो मेरे हबीब और मेरी आँखों की ठंडक हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को जो हजरत अब्दुल्लाह के नूरे नजर हैं।"

✲ जब घर में दाखिल हो तो ये दुआ पढो :-

"अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क खैरल मौलिजि व खैरल मखरिजि बिस्मिल्लहि व लजना व अल्लल्लाहि रब्बना तवक्कलना।"

"ऐ अल्लाह तआला! मैं तुझ से खैर का दाखिल होना और खैर का निकलना मांगता हूँ अल्लाह तआला के नाम की मदद से हम दाखिल हुए और हमने अपने पालनहार अल्लाह तआला पर भरोसा किया।"

✲ जब बीवी से सोहबत करना हो तो सोहबत से पहले ये दुआ पढो :-

"बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम-म जन्निबनश्शैता-न मा रजक तना।"

"अल्लाह तआला के नाम से शुरु। ऐ अल्लाह तआला ! तू हमको शैतान से बचा ! और दूर रख शैतान को उससे जो तू हमको (औलाद) अता फर्माने वाला है।"

✲ जब सफर शुरु करो तो पहले ये दुआ पढो :-

"अल्लाहुम-म बि-क असूलु व बि-क अहूलु व बि -क असीर।"

यानी, "ऐ अल्लाह तआला ! मैं तेरी मदद से हमला करता हूँ और तेरी ही मदद से दिफा करता हूँ और तेरी मदद से चलता फिरता हूँ।"

✲ जब दुश्मनों का खौफ हो तो ये दुआ पढो :-

"अल्लाहुम -म इन्ना नजअलु-क फी नुजूरिहिम व नऊज़ुबि-क मिन शुरुरिहिम।"

यानी, "ऐ अल्लाह तआला ! हम बनाते हैं तुझे उनके मुकाबिले में और तेरी पनाह चाहते हैं उनकी शरारतों से।"

✲ जब किसी स्टेशन, बस स्टेंड पर पहुँचो तो ये दुआ पढो :-

"अऊज़ु बि-कलिमातिल्लाहि-ताम्माति मिन शर्रि मा खलक।"

यानी, "पनाह चाहता हूँ मैं अल्लाह तआला के कामिल कलिमात के साथ उसकी मख्लूक के शर से।"

✲ जब किसी गाँव में दाखिल हो तो ये दुआ पढो :-

"अल्लाहुम-म बारिक लना फीहा।"

यानी, "ऐ अल्लाह तआला तू हमें इस गाँव में बरकत अता फर्मा !"

✲ जब किसी बीमार का हाल-चाल पूँछो, तो ये दुआ पढो :-

"ला बअसु तहूरुन इन्शाअल्लाह !"

यानी, "कुछ हरज नहीं इन्शाअल्लाह यह बीमारी आपको पाक करेगी।"

फिर सात बार यह दुआ पढो -

"असअलुल्लाहल अजी-म रब्बुल अर्शिल अजीमि अैयशफी-क।"

यानी, "मैं सवाल करता हूँ अजमत वाले अल्लाह तआला से जो अर्शे आजम का मालिक है कि तुझे सेहत व तन्दरुस्ती अता फर्माये।"

✲ जब आसमान पर गरज की आवाज सुनो तो यूँ कहो :-

"सुब्हा-न मन युसबिहुर्रअदु बिहम्दिही वलमलाइकतु मिन खीफतिह।"

यानी, "वह जात पाक है कि गरज भी उसकी हम्द के साथ तसबीह बयान करती है और फरिश्ते भी उसके खौफ से।"

✲ जब बिजली चमके तो यूँ कहो :-

"अल्लाहुम-म ला तकतुलना बिफदलि-क वला तुहलिकना बि अजाबि-क व आफिना कब्ल जालिक।"

यानी, "ऐ अल्लाह हमें अपने गजब के साथ न मारना और न अपने अजाब के साथ हलाक करना हमें उस से पहले आफियत अता फर्मा !"

✲ जब आसमान से बारिश बरसे तो यूँ कहो :-

"अल्लाहुम-म सकयन हनीयन व सबयन नाफिअन।"

यानी, "ऐ अल्लाह ! ऐसी बारिश बरसा ! जो सैराब करने वाली खुशगवार हो पहुँचने वाली और नफा बख्श हो।"

✲ जब तुम्हारा कान बोलने लगे तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर दुरुद शरीफ भेजो औरे यूँ कहो :-

"ज-क रल्लाहु मन ज-क-र नी बिखैर।"

यानी, "जो आदमी भलाई के साथ मेरा जिक्र करे अल्लाह तआला उसे याद फर्माए।"

✲ जब मस्जिद में किसी को खरीदते-बेचते देखो तो यूँ कहो :-

"ला अर ब-हल्लाहु तिजा-र-त-क।" यानी, "अल्लाह तआला तुझे तिजारत (धंधे) में नफा न दे।"

✲ जब दुआ कुबूल हो जाए तो अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हुए ये कलिमात कहो:-

"अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी बिइज्जतिही व जलालिही ततिम्मुस्सालिहात।" यानी, "तमाम तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जिसकी इज्जत व जलाल के साथ नेकियाँ मुकम्मल होती हैं।"

✲ जब नमाज पढ चुको तो दुआ इस तरह मागो :-

पहले अल्लाह तआला की हम्द बयान करो दुरुद पढकर नीचे की कुरआनी दुआयें पढो फिर दुरुद शरीफ पढकर हाथ मुंह पर फेर लो -

(१) रब्बना तकब्बल मिन्ना इन्न क अन्तस् समीऊल अलीम

तर्जुमा :- ऐ रम हमारे रब ! हम से कुबूल फरमा बेशक तू ही है सुनता जानता ।

(२) रब्बना आतिना फिदुन्या हसन तँव व फिल आखिरति हस न तँव व किना अजा बन्नार

तर्जुमा :- "ऐ रम हमारे रब ! हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आखिरत में भलाई दे और हमें अजाबे दोजख से बचा ।"

(३) रब्बना अफ्रिग अलैना सब् रँव व सब्बित अक्दाम ना वन् सुर्ना अल्ल-कौ मिल् काफिरीन

तर्जुमा :- "ऐ रम हमारे रब ! हम पर सब्र उंडेल और हमारे पाँव जमे रख और काफिर लोगों पर हमारी मदद कर।"

(४) रब्बना ला तुआखिजना इन् नसीना औ अख्तुताना

तर्जुमा :- "ऐ रम हमारे रब ! हमे न पकड़. अगर हम भूलें या चकें ।"

(६) रब्बना व ला तह्मिल अलैना इस्रन् कमा हमलतहू अलल्लहुलजी न मिन कब्लिना।

तर्जुमा :- "ऐ हमारे रब ! और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तू ने हम से अगलों पर रखा था।"

(७) रब्बना ला तुजिग् कुलूबना बाअ द इज ह दै तना व हब् लना मिल्लदुन क रहमतन् इन् न क अन्तल्वहहाब।

तर्जुमा :- " ऐ हमारे रब ! दिल टेढे न कर बाद इसके कि तू ने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रहमत अता कर बेशक तू है बडा देने वाला।"

(८) रब्बना इन्नना आ मन्ना फग्फिर्लना जुनूबना व कि ना अजाबन्नार

तर्जुमा :- " ऐ हमारे रब ! हम ईमान लाए तू हमारे गुनाह मुआफ कर और हमें दोजख के अजाब से बचा ले।"

(९) रब्बना आमन्ना बि मा अन् जल त वत्तबाअ नर्रसू ल फक्तुब्ना मअश्शाहिदीन

तर्जमा :- ऐ रब हमारे ! हम उस पर ईमान लाये जो तूने उतारा और रसूल के ताबेअ हुए तू हमें हक पर गवाही देने वालों में लिख ले।

(१०) रब्बनगफिर लना जुनूबना व इस्राफना फी अम्रिना व सब्बित् अकदा-मना वन्सुर्ना अलल -कौमिल्काफिरीन

तर्जुमा :- "ऐ हमारे रब ! बख्श दे हमारे गुनाह और जो ज्यादतियाँ हम ने अपने काम में की और हमारे कदम जमा दे और हमें उन काफिर लोगों पर मदद दे।"

(११) रब्बना मा खलक् त हाजा बातिलन सुब्हान-क फकिना अजाबन्नार

तर्जुमा :- "ऐ रब हमारे ! तूने यह बेकार न बनाया पाकी है तुझे तू हमें दोजख के अजाब से बचा ले।"

(१२) रब्बना फग्फिर लना जुनूबना व कफ्फिर अन्ना सय्यिआतिना व तवफ्फना मअल अब्रार

तर्जुमा :- "ऐ हमारे रब ! तू हमारे गुनाह बख्श दे और हमारी बुराईयाँ मुआफ फरमा दे और हमारी मौत अच्छों के साथ कर।"

(१३) रब्बना आमन्ना फक्तुब्ना मअश्शाहिदीन

तर्जमा :- ऐ रब हमारे ! हम ईमान लाए तू हमें हक के गवाहों में लिख ले।

शरीफ मर्दों और औरतों के औसाफ : कुरआन और हदीस के उजाले में

अल्लाह तआला कुरआन पाक में ईशाद फर्माता है- "बेशक ! मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और मोमिन मर्द और मोमिना औरतें, और फर्मा बरदारी करने वाले मर्द और फर्मा बरदारी करनेवाली औरतें, सच बोलने वाले मर्द और सच बोलने वाली औरतें, आजिजी करने वाले मर्द और आजिजी करने वाली औरतें, सदका व खैरात करने वाले मर्द और सदका व खैरात करने वाली औरतें, रोजा रखने वाले और शर्मगाहों की हिफाजत करने वाले मर्द और अपनी पारसाई की हिफाजत करने वाली औरतें, अल्लाह तआला ने उनके लिए बख्शिश और बडा सवाब तय्यार किया है।" (सूरह अहजाब)

एक मकाम पर फर्माया -

"मर्द औरतों पर मुहाफिज व निगरा (देखभाल) करने वाले हैं। इस लिए कि अल्लाह तआला ने मर्दों की औरतों पर बडाई अता फर्माई है। और इसलिए भी कि मर्द अपना माल उनपर खर्च करते हैं, तो जो नेक औरतें फर्मा बरदार होती हैं और मर्दों की गैर हाजिरी (मर्दों को घर में मौजूद न होने पर) हिफाजत करने वाली होती हैं अल्लाह की हिफाजत से।"

शरीफ मर्द और औरत से खिताब अहादीस के उजाले में मुलाहजा हों :-

★ **सब से बडी नेमत :** दुनिया की नेमतों में कोई चीज नेक बीवी से अफजल नहीं। (इब्ने माजा शरीफ)

★ **दुनिया की बेहतरीन नेमत :** दुनिया की नेमतों में बेहतरीन नेमत, नेक बीवी है। (नसाई शरीफ)

★ **गैर बीवी से मु तअस्सिर होने पर अपनी**

★ **बीवी के पास चला जाये :** जब तुम में से

कोई आदमी किसी औरत को देखकर उसके हुस्न से मुतअस्तिर (प्रभावित) हो तो चाहिए कि वह अपनी बीवी के पास चला जाये, क्योंकि इसके पास भी वही कुछ ही है, जो उसके (गैर औरत) पास था।(तिर्मिजी शरीफ)

★ **शौहर से अलग रात गुजारने वाली औरत पर फरिश्ते लानत भेगते है :** जब औरत अपने शौहर से बचते हुए अलग रात गुजारती है तो फरिश्ते उस पर लानत भेजते हैं जब तक शौहर के पास चली नहीं आती । (बुखारी शरीफ)

★ **औरत बगैर इजाजत शौहर नफ्ली रोजा न रख्खे :** औरत अपने शौहर की मौजूदगी में उसकी इजाजत के बगैर रोजा न रख्खे। (बुखारी शरीफ)

★ **अपनी जरुरतों के लिए औरत घर से निकल सकती है :** बेशक! अल्लाह तआला ने तुम्हें इस बात की छूट दी है कि तुम अपनी जरुरतों के लिए घर से निकल सकती हो।(बुखारी शरीफ)

★ **बगैर शौहर की इजाजत घर से निकलने वाली औरतों पर लानतों की बौछार :** जब औरत अपने शौहर की मर्जी के खिलाफ अपने घर से निकलती है तो आसमान का हर वह चीजें जिस पर से वह गुजरती है उस पर लानत भेजती है। जब तक वापस न आ जाये। (कशफुल गुम्मा)

★ **जो औरत दुसरों के लिए खुश्बू इस्तेमाल करे वह जानिया है :** जो औरत खुश्बू वगैरह लगाकर लोगों के पास से गुजरती है ताकि लोग उसकी खुश्बू पायें वह जानिया है।(नसाई शरीफ)

★ **औरत बगैर महरम के सफर न करे :** किसी मुसलमान औरत के लिए हलाल नहीं कि वह बगैर महरम आदमी के एक रात का भी सफर करे। (अबू दाऊद शरीफ)

★ **जिनके शौहर गैर मौजूद हों, उनके पास मत जाओ :** उन औरतों के पास न जाओ, जिनके शौहर मौजूद न हों। क्योंकि शैतान तुम में से हर एक के अन्दर खून की तरह गर्दिश करता है। यानी उसको बहकाते देर नहीं लगती। (तिर्मिजी शरीफ)

★ **गैर औरतों के पास ज्यादा आना-जाना मत रख्खयो :** खबरदार गैर औरतों के पास ज्यादा आना-जाना मत रख्खो!

एक आदमी ने अर्ज किया -" या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु तआला अलैकि व सल्लम देवर और जेठ के बारे में क्या हुक्म है?"

फर्माया, "वह तो मौत है!" यानी उसके सामने होना गोया मौत का सामना है। क्योंकि उन दोनों से फितने का ज्यादा इमकान(सम्भावना) है। इसलिए कि अकसर देवर और जेठ वगैरह से पर्दा नहीं होता और दोनों में हँसी-मजाक वगैरह भी हो जाता है।

★ **सर में लोहे की कील ठोक दिया जाना बेहतर है, किसी गैर औरत को छूने से :** तुम में से किसी के सर में लोहे की कील ठोंक दी जाये यह उस से बेहतर है कि वह किसी ऐसी औरत को छूये जो उसके लिए हलाल नहीं । (तबरानी शरीफ)

आज कल गुमराह, बेगैरत, नफ्स परस्त मर्द व औरत काफिरों की अंधी नकल करते, आपस में एक-दूसरे के साथ गैर महरम होते हुए कमर में हाथ डाले झुमते झुलते और नाचते और न जाने क्या - क्या करते हैं। वे बेशक! आखिरत में सख्त अजाब के हकदार होंगे।

हजरते उम्मे सलमा रजियल्लाहु तआला अन्हा फर्माती हैं कि मैं और मैमूना (रजियल्लाहु तआला अन्हा) दोनों हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास थी, कि इतने में हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मकतूम रजियल्लाहु तआला अन्ह जो नाबीना (अंधे) सहाबी थे आप की खिदमत में हाजिर हुए। तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हम दोनों से फर्माया- "इनसे पर्दा करो!" हजरते उम्मे सलमा फर्माती हैं, मैं ने अर्ज किया- "या रसूलल्लाह! क्या वे अंधे नहीं है? वे हमें नहीं देख सकेंगे।"

फर्माया, "क्या तुम भी अंधी हो? और क्या तुम भी उनको नहीं देखोगी।"

इस से मालूम हुआ कि सिर्फ यह

जरुरी नहीं कि मर्द औरत को न देखे, बल्कि यह भी जरुरी है कि औरत भी अजनबी गैर महरम मर्द को न देखे। देखो ! यहाँ मर्द नाबीना हैं, मगर पर्दा का हुक्म दिया गया।

★ **देखने और दिखाने वाले पर खुदा की लानत :** अल्लाह की लानत हो देखने वाले पर और उस पर जिसकी तरफ नजर की गई। यानी जब देखने वाला बिला उज्र (बगैर मजबूरी) जान-बूझ कर देखे और दूसरा अपने को जान बूझ कर दिखाये और खुश हो कि वह मुझे देख रहा है।'' (मिश्कात शरीफ)

★ **एक दूसरे के सतर को मत देखो :** कोई मर्द दूसरे मर्द के सतर (शर्मगाह) न देखे। और न कोई औरत दूसरी औरत का सतर देखे। और न कोई मर्द दूसरे मर्द के साथ एक कपडे में नंगा सोये। और न कोई औरत दूसरी औरत के साथ एक कपडें में नंगी सोये।'' (मुस्लिम शरीफ)

आजा का जिना : आँखे जिना करती हैं, और उनका जिना नजर करना है। कान जिना करत हैं, और उनका जिना बातें सुनना है। हाथ जिना करते हैं, और उनका जिना पकडना है। पाँव जिना करते हैं, और उनका जिना चल के जाना है। जबान जिना करता है, और उसका जिना बात करना है। और दिल जिना करता है, और उसका जिना (शहवत से) दिल में ख्वाहिश (तलब-लपक) पैदा होना है। यहाँ तक कि जिना हो जाता है। जो सख्त हराम है। (मुस्लिम शरीफ)

औरतों का मर्तबा- हदीस की रौशनी में

★ दूध पिलाने वाली औरत को दूध के एक-एक कतरे के बदले सवाब मिलता है।

★ हामेला (गर्भवती) औरत की दो रकात नमाज दूसरी औरतों की ८० रकात के बराबर है।

★ शौहर परेशान हाल घर में आए और बीवी हंसी-खुशी उसका इस्तेकबाल करे, उसे तसल्ली दे तो उसे जेहीद का सवाब मिलता है।

★ जो औरत अपने बच्चे के रोने की वजह से रात को न सो सके उसे २० गुलाम आजाद करने का सवाब मिलता है।

★ जो औरत अपने शौहर को अल्लाह की राह में भेजे और उसकी गैर मौजूदगी में घर-बार, इज्जत-आबरु की हिफाजत करे वह अपने शौहर से ५०० साल पहले जन्नत में जाएगी।

★ बच्चों की तीमारदारी व खिदमत में होने वाली तकलीफ के बदले मां-बाप को बेपनाह सवाब मिलता है, गुनाह माफ होते हैं।

★ बिस्मिल्लाह .... पढकर जानवर का दूध निकालने वाली औरत के लिए वह जानवर दुआ मागता है।

★ पाक दामन, नमाज - रोजे की पाबन्द और शौहर की खिदमत करने वाली औरतों के लिए जन्नत के आठों दरवाजे खोल दिए जाते हैं।

★ शौहर की नाफरमानी करने वाली औरतों की इबादत कबूल नहीं होती।

★ हामेला औरत की हर रात इबादत और दिन रोजे में शुमार किया जाता है।

★ बच्चे की पैदाइश के बाद ४० दिन के अन्दर अगर औरत का इन्तेकाल हो जाए तो उसे शहादत का मर्तबा मिलता है।

★ जिस औरत का शौहर राजी हो, वह इन्तेकाल कर जाए तो जन्नत नसीब होती है।

★ बीवी को एक मसला सिखाना ८० साल की इबादत से अफजल है।

★ दुनिया में तकलीफ उठाने वाली औरत का मर्तबा हजरत आसिया जैसा है। (माखूज)

सलातुत्तसबीह की नमाज

★ सना के बाद १५ बार ये पढे :-
"सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर।"

फिर "अऊजुबिल्लाह-बिस्मिल्लाह" और "अल्हम्दु लिल्लाह" फिर कोई सूरह पढकर १० बार यही तस्बीह (ऊपर जो लिखी है) पढे।

फिर रुकुअ में जाकर "सुब्हा-न रब्बियल अजीम" के बाद १० बार यही तसबीह पढे।

फिर रुकूअ से खडे होकर "समिअल्लाहु लिमन हमिदह, रब्बना हम्द" के बाद १० बार यही तस्बीह पढे।

फिर सजदें में जाकर "सुब्हा-न रब्बियल आला" के बाद १० बार,

फिर सदे से सर उठा कर बैठने में १० बार,

फिर दूसरे सजदे में भी १० बार,

फिर दूसरी रकात में "अल्हम्दु लिल्लाह" से पहले १५ बार।

फिर इसी तर्तीब से ४ रकातें पूरी करें। इस तरह हर रकात में ७५ बार और चारों रकातों में ३०० बार ये तसबीह पढी जाएगी।

मगर, हाँ ! याद रखना ! कि, पहली बैठक में "अत्तहीयातु" के बाद दुरुद शरीफ भी पढेंगें।

और ये भी याद रखना! तीसरी रकात के लिए जब खडें हों तो पहली रकात की तरह, सना, अऊजुबिल्लाह और बिस्मिल्लाह भी पढेंगे।

अच्छी और बुरी नीयत का फल

'नीयत' दिल के इरादे को कहते हैं। तमाम आमाल के सवाब का दारोमदार (जड, बुनियाद) नीयतों पर है।

आमाल दो किस्म के हैं। बुरा अमल, चाहे बुरी नीयत से किया जाये या अच्छी नीयत से उसपर सवाब मिलने का तो कोई सवाल ही नहीं है। इसलिए कि बुरा अमल तो हर हाल, हर सूरत में बुरा ही है और अजाब में डालने वाला है।

"रह गया अच्छा अमल, तो इसके बारे में हदीस शरीफ है कि -

"तमाम अच्छे काम, चाहे दिल के आमाल हों, या दूसरे आजा (इन्द्रीय) के। जिन कामों के करने का हुक्म दिया गया है उन कामों से बचना हो। इबादत के आमाल हो या आदात के, उन सब कामों से बचना हो। इबादत के आमाल हो या आदात के, उन सब कामों पर उसी वक्त सवाब मिलेगा, जब उन आमाल (कामों) को अल्लाह तआला की नजदीकी और उसकी खुशी हासिल करने की नीयतों से किया जाये।

अगर मआजल्लाह! कोई अमल चाहे वह कितना ही अच्छा से अच्छा अमल (काम) क्यूँ न हो, खुदा को राजी करने की नीयत से न किया जाये बल्कि दिखावा, या शोहरत (मशहूर होने के लिए) या नफ्स की लज्जत, या और किसी बुरे मकसद की नीयत से किया जाये, तो अगरचे वह अमल फर्ज व वाजिब, या सुन्नत व मुस्तहब ही क्यूँ न हो, हरगिज उस पर कोई अज्र व सवाब नहीं मिलेगा। बल्कि उल्टा ईमान का नुकसान और जान का अजाब और दोनों दुनिया में टूटे व बदनसीबी का सामान बन जाएगा।

मसलन कौन नहीं जानता! कि, "नमाज" एक ऐसा बेहतरीन और अच्छा अमल खैर है कि तमाम फर्जों और इबादतों में सब से अफजल व अहम है। यही नमाज अगर खुदा की

रिजा (खुशनूदी) और उसकी नजदीकी व रहमत हासिल करने और खुदा का फर्ज (हुक्म) बजा लाने की नीयत से पढी जाये तो सुब्हानल्लाह ! उसके अज्र व सवाब का क्या पूछना! नूर ही नूर, है। लेकिन यही नमाज अगर कोई इस नीयत से पढे कि, "लोग मुझे नमाजी समझ कर, मेरी खूब खूब आव भगत करेंगे। और मेरी बुजुर्गी का खूब-खूब शोहरा (प्रोपेगन्डा) होगा ।" तो जाहिर है कि ये नमाज जो तमाम इबादतों में अफजल व आला थी, इस बुरी नीयत से बुरे से बुरे गुनाह की वजह बन गई। और ऐसे नमाजी को लानतों की फटकार और जहन्नम के अजाब के सिवा कहहार व जब्बार के दरबार से और क्या मिलेगा?

इसलिए हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फर्माया कि :-

"तमाम आमाल (कामों) के सवाब का दारोमदार नीयतों पर है। और हर आदमी के लिए वही है जिस चीज की उसने नीयत की है।" (बुखारी मुस्लिम)

जब हदीस शरीफ से साबित हो गया कि अमल के सवाब का दारोमदार (बुनियाद) नीयत पर हैं। तो इस से साफ तौर पर यह नतीजा निकलता है कि अगर एक अमल पर एक ही अच्छी नीयत होगी तो एक ही का सवाब मिलेगा। और अगर एक अमल पर कई अच्छी -अच्छी नीयतें कर ली जायें तो जितनी तादाद में हो अमल का सवाब मिलेगा। मसलन, तुम्हारा कोई भाई मुफलिस व मुहताज है अब अगर इस नीयत से तुम ने उसकी माली इमदाद की कि तुम अपने भाई की मदद कर रहे हो तो तुम्हें अपने रिश्तादार के साथ नेक सुलूक करने का सवाब मिलेगा। और अगर इस नीयत से उसकी माली इमदाद की है कि तो वह एक मुसलिफ गरीब आदमी है तो तुम को सिर्फ एक मुसलिफ की मदद करने का सवाब मिलेगा। और अगर तुमने उसकी इमदाद के वक्त दो नीयत कर ली कि तुम अपने एक रिश्तादार की मदद भी कर रह हो और उम्मते रसूल के एक मुहताज की माली इमदाद भी कर रहे हो तो चूँकि तुम्हारी अच्छी-अच्छी नीयत दो हैं इस लिए तुम को दो सवाब मिलेगा।एक सवाब अपने रिश्तादार के साथ नेक सुलूक करने का और एक उम्मते रसूल के एक मुफलिस की इमदाद करने का। इसी तरह एक नेक काम में जिनती अच्छी-अच्छी नीयतें ज्यादा होंगी सवाबों की तादाद भी बढती जाएगी।

✻ जिंदगी के ऊँच-नीच में इन गलतियों से बचों ✻

१) इस ख्याल में हमेशा मगन रहना कि जवानी और तन्दुरुस्ती हमेशा रेहगी।
२) मुसीबतों में बेसब्र बन कर चींख पुकार करना।
३) अपनी अक्ल को सब से बढकर समझना।
४) दुश्मन को हकीर समझना।
५) बीमारी को मामूली समझ कर शुरू में इलाज न करना ।
६) अपनी राय पर अमल करना और दूसरों के मशवरों को ठुकरा देना।
७) किसी बदकार को बार बार आजमा कर भी उसकी चापलूसी में आ जाना ।
८) बेकारी में खुश रहना और रोजी तलाश न करना।
९) अपना राज किसी दूसरे को बता कर उसे पोशीदा रखने की ताकीद करना।
१०) आमदनी से ज्यादा खर्च करना।
११) लोगों की तकलीफों में शरीक न होना और उनसे इमदाद की उम्मीद रखना।

१२) एक दो ही मुलाकात में किसी शख्स की निस्बत कोई अच्छी या बुरी राय कायम कर लेना।

१३) वालिदैन की खिदमत नकरना और अपनी औलाद से खिदमत की उम्मीद रखना।

१४) किसी काम को इस ख्याल से अधूरा छोड देना कि फिर किसी वक्त मुकम्मल कर लिया जाएगा।

१५) हर शख्स से बदी करना और लोगों से अपने लिए नेकी की उम्मीद रखना ।

१६) गुमराहों की सोहबत में उठना बैठना।

१७) कोई अमले सालेह की तलकीन करे तो उस पर ध्यान न देना ।

१८) खुद हराम व हलाल का ख्याल न करना और दूसरों को भी उस पर लगाना।

१९) झूठी कसम खा कर और झूट बोलकर धोका देकर अपनी तिजारत (बिझनेस) को फरोग देना।

२०) इल्मे दीन और दीनदारी को इज्जत न समझना।

२१) खुद को दूसरों से बेहतर समझना।

२२) फकीरों और साइलों को अपने दरवाजे से

२३) धक्का देकर भगा देना।

२४) जरुरत से ज्यादा बात चीत करना।

२५) अपने पडोसियों से बिगाड रखना।

२६) बादशाहों और अमीरों की दोस्ती पर ऐतबार करना।

२७) ख्वाह मख्वाह किसी के घरेलू मुआमलात

२८) में दखल देना।

बगैर सोचे समझे बात करना।

२९) तीन दीन से ज्यादा किसी का मेहमान

३०) बनना।

अपने घर का भेद दूसरों पर जाहिर करना।

हर शख्स के सामने अपना दुःख दर्द बयान करना।

अस्मा-ए हुस्ना (अल्लाह तआला के नामों की बरकतें)

हजरत सैयदना अबू हूरैरह रजियल्लाहु तआला अन्ह से रिवायत है कि, हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फर्माया -

"बेशक! अल्लाह अल्लाह तआला के ९९ नाम हैं जो कोई मेमिन उन नामों से याद करे वह जन्नती हो गया।"

★अगर किसी शख्स को कोई जरुरत हो तो उसे चाहिए कि अस्मा-ए हुसना को रोजाना ४१ बार ४० दिन तक पढे और आखिरी दिन अल्लाह तआला की बारगाह में सजदा की हालत में अपनी हाजतें पेश करे।

★हर नाम को रोजाना १०० बार पढने से हर नेक काम की तौफीक हासिल होगी, घर में बरकत होगी, अल्लाह तआला की याद की तरफ दिल का खूब झुकाव होगा, इज्जत व दौलत में इजाफा होगा, लोगों के दिलों में कद्र और महब्बत पैदा होगी और सब से बढकर यह फायदा हासिल होगा कि ईमान पर खात्मा बिलखैर होगा।

अलमुख्तसर अस्मा-ए हुस्ना दीन व दुनिया की काम्याबी और आखिरत में नजात का जीरया है।

★ इस्मे आजम में दुनिया व आखिरत की काम्याबी और मुश्किलात का हल मौजूद है। मगर शर्त यह है खुलूस दिलसे इसका वजीफा किया जाए, अल्लाह तआला के दो सिफाती नामों को मिला कर पढने से तासीर में मकसद हासिल

होने के लिए ताकत पैदा होती है और काम जल्दी हो जाता है।नीचे कुछ सिफाती नामों के उनकी कुछ खुसूसियात के साथ जिक्र किया गया है -

★ **मुहताजी से बचने के लिए -** "या अजीजु ! या मुगनी !!"

★ **इज्जत हासिल होने के लिए -** "या जलीलु ! या करीमु !!"

★ **मख्लूक से बेनियाजी के लिए -** "या वहहाबु ! या वासिअु !!"

★ **जान व माल की हिफाजत के लिए -** "या मुमिनु ! या नाफिअु !!"

★ **लडकियों की शादी के लिए -** " या लतीफु ! या हलीमु !!"

★ **औलाद हासिल होने के लिए -** " या मुतकब्बिरु ! या वाहिदु !!"

★ **बांझ औरत के लिए -** " या मुसव्विरु ! या खालिकु !!"

★ **हमल की हिफाजत के लिए -** " या मुबदिअु ! या सलामु !!"

★ **मियाँ बीवी में महब्बत के लिए -** "या वदूदु ! या कबीरु !!"

★ **मकान, दुकान, दफ्तर की हिफाजत के लिए -** " या रज्जाकु ! या हबीबु !! "

★ **इल्म की ज्यादती के लिए -** " या हैकीमु ! या बाइसु !!"

★ **खत्मा ईमान पर होने के लिए -** " या मुअख्खिरु ! या आखिरु !!"

★ **शफाअत नसीब होने के लिए -** " या हसीबु ! या तव्वाबु !!"

★ **दुखूले जन्नत के लिए -** " या अफूअु ! या राफिअु !!"

★ **दौलत हासिल होने के लिए -** " या गनीयु ! या मुगनी !!"

★ **दुकान में बरकत के लिए -** " या फत्ताहु ! या रज्जाकु !!"

★ **गलबा के लिए -** " या कबीयु ! या अजीजु !!"

★ **रोजी में ज्यादती के लिए -** " या बासितु ! या मुनाअिमु !!"क

★ **खैर व बरकत के लिए -** " या मुअती ! या शकूरु !!"

दुरुद व सलाम के फजाइल व फवाइद

★ दुरुद व सलाम पढने से अल्लाह तआला के हुक्म की तकमील होती है। (कुरआन शरीफ)

★ दुरुद व सलाम पढने में अल्लाह तआला की मवाफिकत होती है। (कुरआन शरीफ)

★ दुरुद व सलाम पढने में फरिश्तों की मवाफिकत होती है। (कुरआन शरीफ)

★ दुरुद व सलाम पढने वाले के लिए जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाते हैं। (सआदतुद्दारैन)

★ जो एक बार दुरुद शरीफ पढे, अल्लाह तआला उस पर दस बार रहमत भेजता है । (मुस्लिम शरीफ)

★ जुमारात और जुमा को फरिश्ते दुरुद शरीफ चाँदी के सहीफों में सोने के कलम से लिखते हैं। (सआदतुद्दारैन)

★ दुरुद व सलाम पढने से भूली - बिसरी हुई चीजें याद आ जाती हैं। (कुंजल उम्माल)

★ जुमा की रात और जुमा के दिन दुरुद शरीफ पढने वाले की सौ हाजतें पूरी होती हैं, सत्तर आखिरत की और तीस दुनिया की (अहसनुल कलाम)

★ तंगदस्त के लिए दुरुद व सलाम सदके की जगह हो जाता है। (जवाहिरुल बहार)

★ दुरुद व सलाम पढने वाला पाक हो जाता है। (सआदतुद्दारैन)

★ सलात व सलाम पढने वाले को मौत से पहले जन्नत की खुशखबरी दी जाती है। (सलातुस्सना)

★ दुरुद व सलाम पढने से हुजूर नबी-ए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हुकूक में से कुछ अदा हो जाता है। (सलातुस्सना)

★ सलात व सलाम पढने वाले को दस गुलाम आजाद करने के बराबर सवाब मिलता है। (सआदतुद्दारैन)

★ उसके नामा-ए आमाल में उहुद पहाड जितना सवाब लिखा जाता है। (सलातुस्सना)

★ ज्यादा से ज्यादा दुरुद व सलाम पढने वाले को अर्शे इलाही का साया नसीब होगा (सआदतुद्दारैन)

★ दुरुद व सल्लाम पढने से दुश्मनों पर फतह मिलती है। (अफजलुस्सलवात)

अहादीस करीमा से जिन जाहिरी फायदो व बरकतों का सुबूत मिलता है उनमें से कुछ और मुलाहजा फर्माइये!

★ दुरुद व सल्लाम पढने से दस रहमतें हासिल होती हैं।

★ सद दर्जे बुलंद होते है।

★ दस नेकियाँ नामा-ए आमाल में लिखी जाती है।

★ दस गुनाह मिटते हैं।

★ हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की शफाअत नसीब होती है।

★ बहुत से बीमारियों से नजात हासिल होगी।

★ हुजूर सल्लल्लाहु तआला व आलिही व सल्लमकी महब्बत और अल्लाह तआला की रिजा हासिल होगी।

★ दिल की सफाई होगी।

★ दुरुद व सलाम पढने वाले का नाम बारगाहे रिसालत माआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि में पेश होता है।

★ दुरुद व सलाम पढने वालों से हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कियामत के दिन मुसफा फर्मायेंगे।

★ ख्वाब मे् आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का दीदार नसीब होगा।

★ तीन दिन तक फरिश्ते दुरुद व सलाम पढने वाले के गुनाह नहीं लिखते।

★ लोगों को उसकी गीबत करने से रोक दिया जाता है।

★ मीजान में नेकियों का पल्ला भारी होगा।

★ कियामत में प्यास से बेनियाज रहेगा। पलक झपकते ही पुलसिरात से गुजर जाएगा।

★ बखीली व जुल्म से महफूज रहेगा।

★ आखिरत की मसतलेहतों में दानाई और दिहायत मिलेगा।

सच्च बात तो यह है कि दुरुद सलाम को अजमतें , बरकतें फायदें बेहद व बेशुमार हैं। यहां जो कुछ भी लिखा जाये कम है, बस दुरुद व सलाम पढने में फायदा ही फायदा, नफा ही नफा, बरकत ही बरकत, रहमत ही रहमत, नवाजिश ही नवाजिश, इनायत ही इनायत, इसलिए, पढते ही जाइयें। पढते ही जाईये और कुर्बे नबवी की तरफ बढते ही जाइये ! बडते ही जाइये !!!

लार्ड माउंटबेटन की ख्वाजा गरीब नवाज को आखरी सलामी

भारत से सन् १९४८ में जाते समय इंग्लैंड के आखिरी वाईस राय लॉर्ड माउंटबैटन अपनी पत्नी के साथ अजमेर में हिंदोस्थान के शहनशाह ख्वाजा गरीब नवाज के अस्ताने पर आखरी सलामी देने हाजिर हुए बडे एहतेराम व मिलिट्री के अंदाज में सलामी देने के बाद आस्ताने से बाहर आने पर दुनियां भर के पत्रकारों ने उनसे पूछा कि आप जाते समय यहां कैसे आये? तो लॉर्ड माउंटबेटन ने कहा कि हमसे हिंदोस्तान की दो शख्सियतें नाराज हैं। इसलिए हमें भारत छोडकर जाना पड रहा है। वरना अभी और हम राज करते। जब उनसे पूछा गया कि वो कौन सी हस्तियां है जो आपके इंग्लैंड राज से नाराज हैं? तो उन्होंने बहुत ही अदब से जवाब दिया कि, एक तो वो हैं जो पर्दा कर चुके हैं। मैं जिनके आस्ताने पर सलामी देने आया हूँ वे ख्वाजा गरीब नवाज और दूसरे जिन्दों में शेरे व अहले सुन्नत मौलाना हशमत अली खाँ साहब खलीफा-ए आला हजरत इमाम अहमद रजा खाँ बरेलवी। इन दोनों की नाराजगी से हमें यह मुल्क छोड कर जाना पड रहा है। अगर यह दोनों हमसे नाराज न होते तो हम और कई बरसों तक भारत पर राज करते। यह है ख्वाजा गरीब नवाज रजियल्लाहु तआला अन्हु की शान, जिनके बगैर इस मुल्क में कोई राज कर ही नहीं सकता और दूसरे अहले सुन्नत वल जमात के आलिम जिनके डर से अंग्रेजों को जाना पडा। वहाबी (गुस्ताखे रसूल यानी आधे इसाई)जमात (अहले हदीस सल्फी, तब्लीगी जमात, देवबंदी, जमाते इस्लामी, कादियानी वगैरा) तो अंग्रजों की एजेन्ट थी। जिन्हें अंग्रेजों ने परवान चढाया। और ये उनका पट्टा गले में डाल कर दुम हिलाते रहे । इस पर से अंदाजा लगाये कि लखनऊ का नदवतुल उलूम वहाबियों का दूसरा सबसे बडा मदरसा, जिसकी संगे बुनियाद एक अंग्रेज अफसर ने रखी थी। और अशरफअली थानवी देवबंदी मौलवी को रु. ६०० महीना देते थे। (साप्ताहिक, ईमान की आवाज, दि. २५/७/०८, नागपुर)
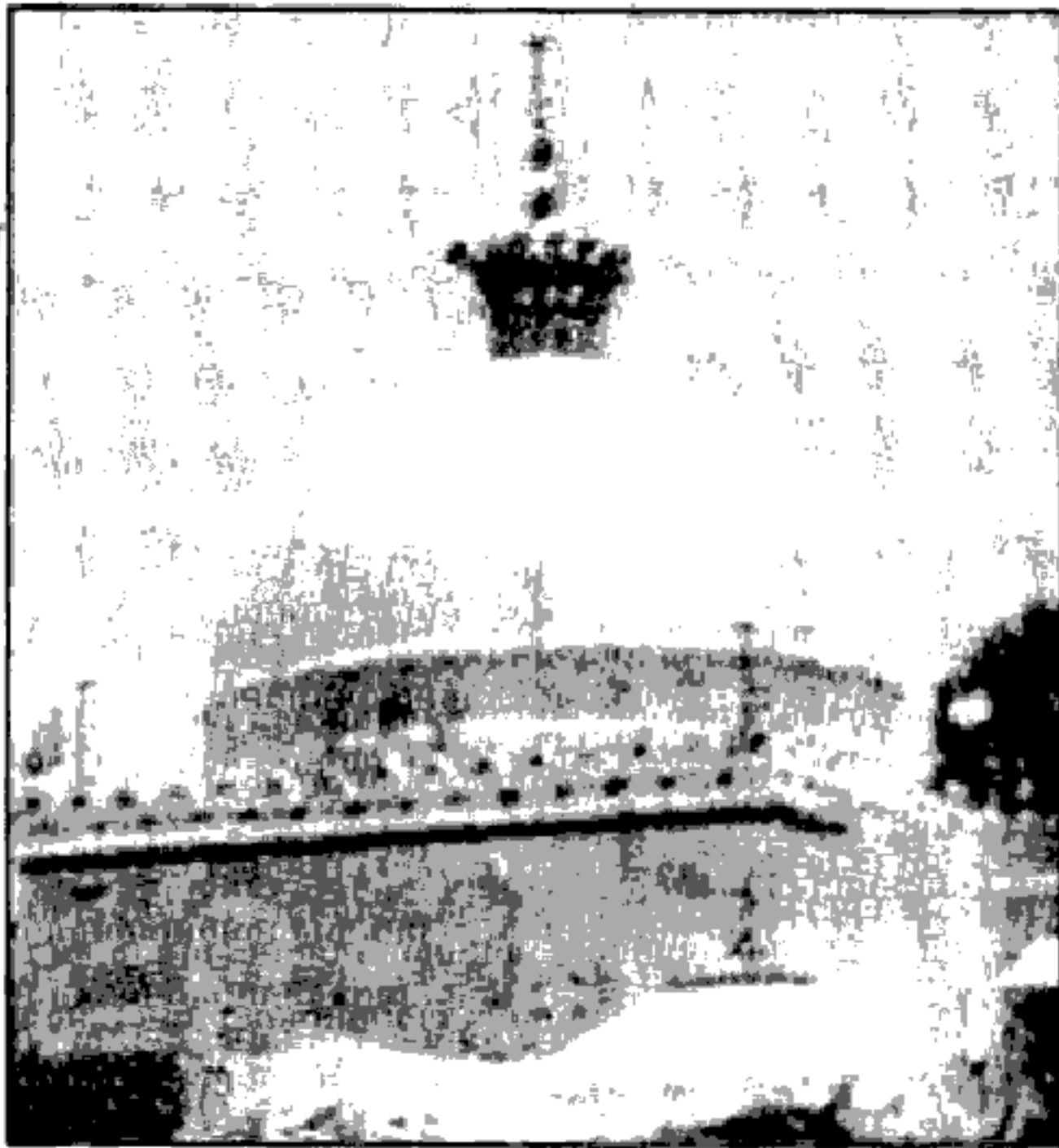
-: खतमशुद :-

मौलाना मुहम्मद जाफरअली सिद्दीकी कादिरी

(मोबा. ९४२१२२०२४९)

१ रमजान सन १४२९ हि. ता. २/९/२००८ ई.

या नबी सलाम अलै-क

मुस्तफा खैरुल वरा हो
सरवरे हर दोरसा हो
अपने अच्छों का तसद्दुक
हम बदों को भी निबाहो
या नबी सलामु अलै-क
या रसूल सलामु अलै-क
या हबीब सलामु अलै-क
सलवातुल्लाह अलै-क

कनजे मकतूमे अजल में
दुर्रे मकनूने खुदा हो
सबसे अव्वल सबसे अखिर
इबतेदा हो इन्तिहा हो
या नबी सलामु अलै-क
या रसूल सलामु अलै-क
या हबीब सलामु अलै-क
सलवातुल्लाह अलै-क

सब बशारत की अजाँ थे
तुम अजाँ का मुद्दआ हो
सब तुम्हारी ही खबर थे
तुम मुअख्खर मुबतदा हो
या नबी सलामु अलै-क
या रसूल सलामु अलै-क
या हबीब सलामु अलै-क
सलवातुल्लाह अलै-क

तूरे मूसा चरखे ईसा
क्या मसावीए दना हो?
सब जिहत के दायरे में
शश जिहत से तुम वरा हो
या नबी सलामु अलै-क
या रसूल सलामु अलै-क
या हबीब सलामु अलै-क
सलबातुल्लाह अलै-क

सब तुम्हारे आगे शाफेअ
तुम हुजूरे किब्रिया हो
सब की है तुम तक रसाई
बारगाह तक तुम रसा हो
या नबी सलामु अलै-क
या रसूल सलामु अलै-क
या हबीब सलामु अलै-क
सलवातुल्लाह अलै-क

वह दरे दौलत पे आए
झोलियां फैलाओ शाहो
क्यों रजा मुश्किल में डरिए
जब नबी मुश्किल कुशा हो
या नबी सलामु अलै-क
या रसूल सलामु अलै-क
या हबीब सलामु अलै-क
सलवातुल्लाह अलै-क

- सरकार आला हजरत अलैहिर्रहमह

या इलाही! हर जगह तेरी अता का साथ हो!!

-सरकार आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी अलैहिर्रहमह

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो ।
जब पडे मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो ॥

या इलाही भूल जाऊँ नजअ् की तकलीफ को ।
शादिये दीदार हुस्ने मुस्तफा का साथ हो ॥

या इलाही गोरे तीरह की जब आए सख्त रात ।
उनके प्यारे मुँह की सुब्हे जाँफिजा का साथ हो ॥

या इलाही जब पडे महशर मे शोरे दार व गीर ।
अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो ॥

या इलाही जब जबानें बाहर आएँ प्यास से ।
साहिबे कौसर शहे जूदो अता का साथ हो ॥

या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब खुरशीदे हश्र ।
सय्यदे बे साया के जिल्लि लिवा का साथ हो ॥

या इलाही गरमिये महशर से जब भडके बदन ।
दामने महबूब की ठंडी हवा का साथ हो ॥

या इलाही नामए आमाल जब खुलने लगें ।
ऐब पोशे खल्क सत्तारे खता का साथ हो ॥

या इलाही जब वहें आँखे हिसाबे जुर्म में ।
उन तबस्सुम रेज होंटों की दुआ का साथ हो ॥

या इलाही जब हिसाबे खंदए बेजा रूलाए ।
चश्मे गिरयाने शफीए मुरतजा का साथ हो ॥

या इलाही रंग लाएँ जब मेरी बेबाकियाँ ।
उनकी नीची-नीची नजरों की हया का साथ हो ॥

या इलाही जब चलूँ तारीक राहे पुलसिरात ।
आफ्ताबे हाशमी नूरूल हुदा का साथ हो ॥

या इलाही जब सरे शम्शीर पर चलना पडे ।
रब्बि सल्लिम कहने वाले गमजुदा का साथ हो ॥

या इलाही जो दुआएँ नेक हम तुझ से करें ।
कुदसियों के लब से आमीन रब्बना का साथ हो ॥

या इलाही जब "रजा" खाबे गिराँ से सर उठाए ।
दौलते बेदार इश्के मुस्तफा का साथ हो ॥

नोट: रोजाना सुबह शाम या हर रोज पंजगाना नमाजों से फारिग होकर इसको पढ़ लिया करें बेहतर है।